चन्दामामा
अगस्त १९६२
60 nP

डाबर
(डा.एस.के.बर्म्मन)
प्राइवेट लि०
कलकत्ता
लालशर
(डाबर-बालामृत)
कॅल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

अगस्त १९६२

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ६० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ७-२०

अगस्त १९६३

मैं विगत ८ वर्षों से, जब मैं सिर्फ ७ वर्ष का था "चन्दामामा" का पाठक हूँ।

तब भी मैं "चन्दामामा" को उतना ही पसन्द करता था, जितना अब करता हूँ। उसकी धारावाहिक कहानियाँ कुछ ऐसी होती हैं कि लगता है कि आगे की, घटनाओं को भी जान जाय। अगर कहानी सुन्दर रहती है तो उस सत्य से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि, चित्र भी अपनी सानी नहीं रखते। "भारत का इतिहास" कहानी के रूप में नहीं रहने के कारण कुछ रोचक नहीं लगता पढ़ने में।

मेरे ख्याल से जो शायद गलत हो सकता है—भूत-प्रेत की आधारहीन कहानियाँ छाप कर बच्चों के दिमाग को खराब न करना चाहिए।

रामकुमार प्रसाद, गया

मैं चन्दामामा छः वर्षों से पढ़ता आ रहा हूँ। इसमें रोचक व प्रशंसनीय कहानियाँ होती हैं जिन्हें पढ़कर मैं मन्त्र मुग्ध हो जाता हूँ। चित्रा, शंकर व वपा के सुन्दर चित्रों को देख कर मेरा हृदय पुष्प प्रसन्नता एवम् आश्चर्य से खिल उठता है। 'गोल मटोल भीम' निरन्तर कथा में हँसी का सागर भरा होता है। 'महाभारत' का अन्तिम पृष्ठ और कहानी भी अच्छी होती है। 'बेताल कथा' तो निःसन्देह ही अत्यन्त प्रिय होती है। "फोटो प्रतियोगिता" भी आकर्षक स्तम्भ है।

शैलेन्द्र "इन्दु" नई दिल्ली

जून १९६३ की "चन्दामामा" में "भाग्य देवता" और "सभी बहरे" रचनायें बहुत अच्छी लगीं।

अगर आप "चन्दामामा" का मुखपृष्ठ फिर से चिकने कागज में कर दें तो बहुत अच्छा रहेगा।

चन्दामामा दिन प्रति दिन उन्नति करे यही मेरी अभिलाषा है।

प्रमोद सौदा, करतारपुर

चंदामामा का जून अंक पढ़ा, अत्यधिक पसंद आया। वास्तव में चंदामामा शुक्लपक्ष के चंद्र के समान उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता चला आ रहा। भारत की यह सर्वश्रेष्ठ मासिक अपने हर अंक में एक नई साज-सज्जा व निरालापन लेकर आता है। जून अंक में मुखपृष्ठ के चित्र के लिए वपन व अंतिम पृष्ठ के लिए आचार्य विशेष बधाई के पात्र हैं। इसमें धारावाहिक उपन्यास "भयंकर घाटी", गंधर्व सम्राट की लड़की" व कहानियाँ "हलाग्र" "चिन्नुरोदन" व भूतों को पकड़नेवाला मनुष्य "विशेष पसंद आयीं। मेरे मत में यदि निम्नांकित उपाय अपनाये जाएँ तो और अधिक सामग्री चंदामामा में दी जा सकेगी:—

चंदामामा में चित्रों की भरमार रहती है अतः एक कहानी के लिए दो या तीन चित्र ही दिये जाएँ।

अक्षरों का आकार (टाइप) छोटी कर दी जाए व आसपास जो थोड़ा-सा स्थान छोड़ दिया जाता है। वह न छोड़ा जावे।

अरोचक स्तम्भ जैसे भारत का इतिहास बंद करके अन्य सामग्री प्रकाशित की जाए तो श्रेष्ठ रहेगा।

विजयकुमार जोशी, बड़नगर

LIFEBUOY
SOAP
लाइफ़बॉय
है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ !
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

हमारे देश के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में अगस्त मास का विशेष महत्व है। इसी मास हम अपना स्वतन्त्रता दिवस मनाते हैं।

सदियों की पराधीनता के बाद हमें स्वतन्त्रता मिली और स्वतन्त्रता के कारण, पिछले कुछ वर्षों में हम असाधारण सर्वतोमुखी प्रगति भी कर सके।

किन्तु आज फिर वह स्वतन्त्रता खतरे में है। इसलिए हमारा यह कर्तव्य है कि इस स्वतन्त्रता की प्राणपण से रक्षा करें। इसके लिए जो कुछ बलिदान आवश्यक हैं, हमें करने होंगे। इस संसार में एक राष्ट्र के लिए स्वतन्त्रता से बड़ी कोई चीज़ नहीं है।

वर्ष: १४ अगस्त १९६३ अंक: १२
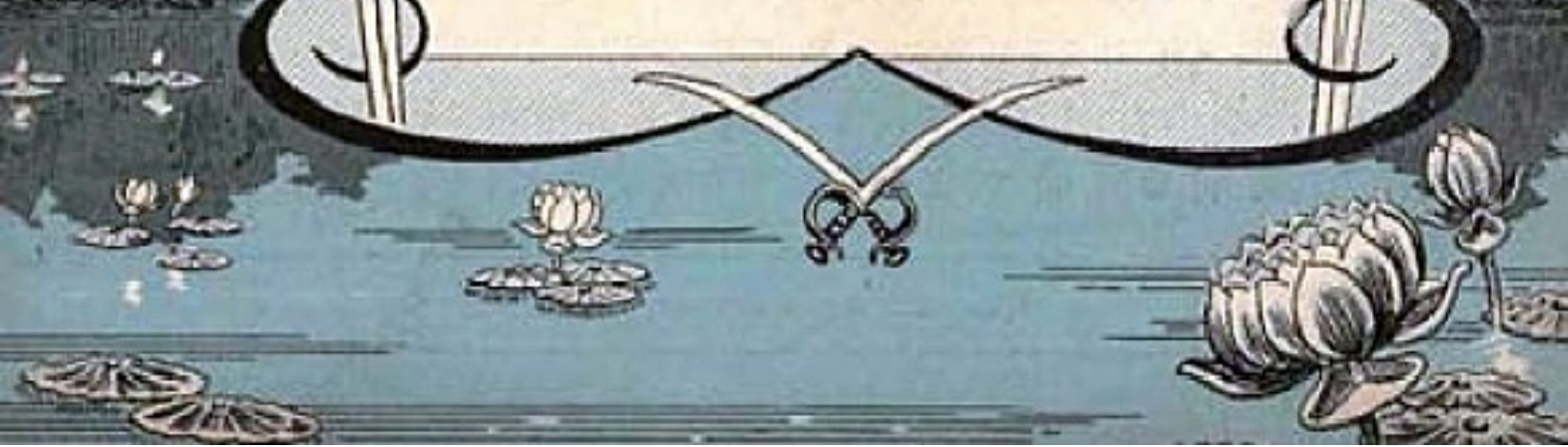
भारत का इतिहास

अलाउद्दीन ने मँगोलों को न केवल कई बार हराया, बल्कि उसने अपने राज्य की उत्तर पश्चिमी सीमा की परिरक्षा के लिए आवश्यक व्यवस्था भी की। जिस रास्ते मँगोल आते थे उस रास्ते के सब किलों की उसने मरम्मत करवायी। नये किले भी बनवाये। सीमाप्रान्तीय नगरों में उसने छावनियाँ भी बनवाई। ग़ाज़ी मलिक (घियासुद्दीन तुगलक) को सीमा की रक्षा के लिए नियुक्त किया। ग़ाज़ी मलिक ने, मँगोलों को पचीस साल तक रोका।

दिल्ली के पास बसे "नये मुसलमानों" ने (मँगोल) बगावत करदी, पर उनकी महत्त्वाकाँक्षायें पूरी न हुईं। सुल्तान ने उन लोगों को, बड़े पदों से हटा दिया। चूँकि सुल्तान को मारने की उनकी साजिश मालूम हो गई थी, एक ही दिन में सुल्तान ने २०, ३० हजार "नये मुसलमानों" को मरवा दिया।

अलाउद्दीन के समय में उसका राज्य इतना बढ़ा कि वह साम्राज्य बन गया। यह साम्राज्य पचास साल तक कायम रहा। अलाउद्दीन के भाई, उलघ खान और वजीर नुसरत खान ने एक बड़ी सेना लेकर, १२९७ में गुजरात पर हमला किया। पहिले भी मुसलमानों ने गुजरात को लूटा तो था पर उसे कभी जीता न था। इस बार गुजरात पराजित हुआ। वहाँ का राजा द्वितीय कर्णदेव, अपनी लड़की, देवलादेवी के साथ भाग गया। रानी कमलादेवी बड़ी सुन्दर थी। वह शत्रुओं के हाथ आ गई और बाद में वह अलाउद्दीन की प्रिय पत्नी भी बनी।

कई "नये मुसलमान" रणथम्भौर के राजा हमीर देव के पास पहुँचे। अल्लाउद्दीन इस पर क्रुद्ध हुआ। १२९९ में उसने अपने भाई और वजीर को उस राज्य पर आक्रमण करने के लिए भेजा। इस आक्रमण में अल्लाउद्दीन की सेनाओं की हार ही नहीं हुई, बल्कि वजीर मारा भी गया। तब स्वयं सुल्तान ने आकर १३०१ जुलाई में रणथम्भौर को जीता। यह विजय एक साल के घेरे के बाद, बड़ी मुश्किल से हुई। हमीर के मन्त्री रणमल ने अपने राजा का विश्वासघात किया और शत्रु के साथ जा मिला। अल्लाउद्दीन ने उस विश्वासघाती को कोई ईनाम न दिया बल्कि उसे मरवा दिया। हमीर और उसके आश्रित "नये मुसलमान" भी मरवा दिये गये। अन्तःपुर की स्त्रियाँ सती हो गईं।

अल्लाउद्दीन का मेवाड़ पर आक्रमण सर्व विदित है। कहा जाता है कि इस आक्रमण का मुख्य कारण चित्तौड़ की रानी पद्मिनी का सौन्दर्य ही था। पद्मिनी का पति रत्नसिंह अल्लाउद्दीन के सैनिकों के हाथ आ गया। और जब वह सुल्तान के तम्बू के पास ले जाया जा रहा था, तो राजपूतों ने उनका मुकाबला किया और अपने राजा की रक्षा की। चित्तौड़ की ड्योढ़ी पर गोरा और बादल नामक राजपूत वीरों ने थोड़ी सेना के साथ, सुल्तान की सेनाओं को कुछ देर रोका। यह जानते ही कि चित्तौड़ का पतन होकर रहेगा, पद्मिनी आदि हज़ारों स्त्रियाँ अग्नि में आहुति हो गईं। अगस्त २६, १३०३ में मेवाड़ का पतन हुआ। सुल्तान ने उसका नाम खिज्राबाद कर दिया। और अपने लड़के खिज्रखान को वहाँ का अधिपति नियुक्त किया।

१३०५ के अन्त में माल्वा भी सुल्तान के वश में आ गया। वहाँ का राजा, महक देव और मन्त्री कोक भी मारे गये। उज्जयिनी, मंडु, धार, और चन्दरी आदि भी धीमे धीमे मुस्लिमों के आधीन हो गये। १३०५ में ही सारा उत्तर भारत खिलजी के साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया।

अब अलाउद्दीन की नजर दक्षिण भारत पर पड़ी। वहाँ की परिस्थितियाँ भी सुल्तान के लिए अनुकूल थीं। तब वहाँ चार मुख्य राज्य थे और चार मुख्य राजा। एक देवगिरि का यादवराजा रामचद्रदेव (१२७१-१३०९) था। यह धर्मपरायण और शक्तिशाली था और दूसरा काकती वंश का प्रताप रुद्र प्रथम था। इसकी राजधानी तेलंगाना का वारंगल थी। तीसरा राजा था, होयसल राजा, वीरबहल तृतीय थी। इसकी राजधानी हले बीड़ थी और इसका राज्य वर्तमान मैसूर था। चौथा मारवर्मा कुलशेखर था (१२६८-१३११) यह पान्ड्य देश का राजा था। वर्तमान मदुरा, रामनाद और तिरूनेलवेली के किले इसके राज्य में थे। व्यापार के कारण पान्ड्य राज्य श्री-सम्पदा से परिपूर्ण था। इनके अलावा कई छोटे छोटे राज्य भी थे। नेल्लूर में तेलुगु चोल राजा, तीसरा मनमसिद्धि था। उरीसा में कलिंग गैंगराजा, भामदेव था। केरल में रविवर्मा, मंगलोर में बंकिदेव अलुपेन्द्र आदि थे। पर इनमें किसी प्रकार की एकता न थी। कुछ कुछ शत्रुता भी थी, यही अलाउद्दीन के साम्राज्य विस्तार का कारण भी बनी।

मनोव्याधि

एक था राजा। वह हर तरह के वैभव और ऐश्वर्य के साथ बहुत दिन तक जिया। बाहर से शत्रुओं के आक्रमण का भय न था। शासन कार्य के लिए समर्थ मन्त्री नियुक्त थे। बस, राजा का काम यही था कि पेट-भर कर खाये और दिल भर कर खुशियाँ मनाये, ऐश करे। अगर कोई इस तरह सालों बैठा रहे, तो वह जरूर मुटिया जायेगा। राजा की भी यही हालत हुई। पेट मटके की तरह बढ़ गया। शरीर भी भारी हो गया। बठता, तो उठ नहीं पाता। चलने की तो ताकत रही नहीं थी।

अपनी हालत देखकर राजा को ही डर लगा। जब कभी वह किसी पतले आदमी को या चुस्त आदमी को, भागते दौड़ते, देखता तो वह राजा सोचा करता—"मैं क्यों उनकी तरह नहीं हूँ। मेरा मोटापन कम हो जाये तो क्या अच्छा हो।"

मन्त्रियों को उसने मोटापन कम करने का कोई उपाय बताने की आज्ञा दी। मन्त्री भी क्या करते! वैद्यों को बुलाकर उन्होंने सलाह माँगी। वैद्यों ने दवाई दी। राजा दवा तो खाता, पर खाने पीने की बातों में कुछ परहेज नहीं करता। परहेज न किया जाये तो दवाइयाँ भी काम नहीं करतीं। वैद्यों ने हार मान ली कि वे राजा का मोटापन कम नहीं कर सकेंगे।

जैसे जैसे मोटापन कम करने के प्रयत्न असफल होते जाते थे, वैसे वैसे मोटापन

कम करने की उसकी चिन्ता बढ़ती जाती थी। उसने मन्त्रियों से कहा कि जो कोई उसको काँटे जितना पतला बना देगा, उसको आधा राज्य दे देगा। मन्त्रियों ने इसकी घोषणा भी करवा दी। कहीं ऐसा न हो कि हर ऐरा गैरा आदमी आकर राजा को तंग न करने लग जाये, इसलिए मन्त्रियों ने यह भी घोषणा करवायी कि जो कोई चिकित्सा प्रारम्भ करके सफल नहीं होगा, उसको फाँसी दे दी जायेगी— यानि पानेवाले या तो आधा राज्य पाते, नहीं तो फाँसी। आधा राज्य मिले या न मिले, पर मरने के लिए कौन तैय्यार होगा। इसलिए घोषणा सुनकर कोई सामने नहीं आया। किसी ने यह नहीं कहा कि "मैं राजा का इलाज करूँगा।"

राजा इस फ़िक्र में ही था कि यह घोषणा सुनकर भी कोई न आया था, एक योगी राजा का मोटापन कम करने के लिए तैय्यार हुआ।

"इसके लिए आप क्या क्या औषधियाँ बरतेंगे जरा हमें बताइये, हमारे सामने ही आपको उन्हें बनाना होगा।" मन्त्रियों ने उस योगी से कहा।

"मामूली दवाइयाँ तो आप बरत ही चुके होंगे। मैं रोगी की जन्मकुंडली देखे बगैर दवा नहीं दूँगा। इसलिए मेरे इलाज़ का कोई जवाब नहीं है। राजा की जन्मकुंडली दिखाइये।" योगी ने कहा।

मन्त्रियों ने राजा की जन्मकुंडली योगी को दी। योगी ने कुछ देर सोचा। फिर उसने कहा—"राजा को दवा की ज़रूरत ही नहीं है। उनका जीवन ही तीस दिन में ख़तम हो जायेगा।"

"राजा की जन्मकुंडली देखकर किसी ने यह नहीं बताया। जो तुम कह

रहे हो वह बिल्कुल झूट है।" मन्त्रियों ने कहा।

"जो मैं कह रहा हूँ, वह होकर रहेगा। यदि आपको विश्वास न हो, तो मुझे ये तीस दिन हवालात में रखिये।" योगी ने कहा।

मन्त्रियों ने योगी को जेल में रखा और वहाँ उसके खाने पीने का इन्तज़ाम किया। पर राजा को योगी की बात पर विश्वास हो गया। यदि उसको अपने ज्योतिष पर पूरा विश्वास नहीं होता, तो वह स्वयं कैद क्यों हो जाता?

बस, राजा को यह फ़िक्र सताने लगी कि वह तीस दिन में मर जायेगा। उसे ऐसा लगा कि ज्यों ज्यों एक एक क्षण बीतता था, त्यों त्यों उसके जीवन का एक एक कण भी जा रहा था। उसे न मनोरंजन ही भाते थे, न ऐश ही कर पाता था। न खाता ही, न सोता ही।

रोज़ ब रोज़ यह मन का वहम बढ़ता जाता था। मन्त्रियों ने कहकर देखा कि योगी की बात सच न थी, पर उसकी फ़िक्र कम न हुई। योगी की दी हुई अवधि पास आयी तो राजा ने चारपाई

पकड़ी। उसने औरों से बातें करना भी छोड़ दिया।

तीस दिन तो बीत गये, पर राजा मरा नहीं। इकत्तीसवें दिन उसकी फिक्र यों जाती रही, जैसे किसी ने जादू किया हो। वह चारपाई से उठा और जल्दी जल्दी मन्त्रियों के पास गया। "वह दुष्ट कहाँ है! उसने झूट बोला था, इसलिए उसको फाँसी पर चढ़ा दो।" राजा ने कहा।

मन्त्री, योगी को कैद से छुड़ाकर लाये। राजा इधर उधर चहलकदमी करने लगा। योगी को देखते ही उसकी ओर लपककर उसने पूछा—"दुष्ट कहीं का, गलत ज्योतिष बताकर मुझे तंग करते हो! तुम्हें क्या सज़ा दी जाये!"

योगी ने मुस्कराकर कहा—"सज़ा! मैं तो सोच रहा था कि आप मुझे ईनाम देंगे।" "तुमने तो बताया था कि मैं जीऊँगा ही नहीं और ईनाम चाहते हो!" राजा ने चौंककर कहा।

"राजा, मैं आपकी चिकित्सा के लिए आया था, न कि ज्योतिष बताने के लिए। आपका मोटापन चला गया है। आपका शरीर सूखकर काँटा हो गया है। आप अब आसानी से चल फिर सकते हैं। चाहें तो भाग भी सकते हैं। इतना सब होने पर भी आप कहते हैं कि मैंने चिकित्सा नहीं की।" योगी ने कहा। राजा को आश्चर्य हुआ। वह आईने के पास गया। उसमें अपना शरीर देखकर उसे बड़ी खुशी हुई। पेट घट गया था। चरबी पिघल गई थी। वह औरों की तरह ही था। उसकी मनोव्याधि ने उसपर औषधी का काम किया था।

"इस योगी को आधा राज्य दे दो।" राजा ने अपने मन्त्रियों से कहा।

[२५]

[पंखवाले मनुष्य, केशव और साथियों से बचकर निकल गये। उसी समय श्वानकर्णी नाम के जंगली गिरोह ने उनको घेर लिया। जयमल्ल श्वानकर्णी की सहायता करने के लिए मान गया। वह उसकी बिड़ाली से सन्धि कराने के लिए भी मान गया और इस काम के लिए, उसने बिड़ाली के एक अनुचर को अपने सरदार को बुलाकर लाने के लिए भेजा। बाद में—]

उस बीड़ाली आदमी को, जो अपने सरदार को बुलाने गया था, रास्ते में सरदार दस आदमियों के साथ मिला। सब पेड़ों के पीछे छुपे-छुपे चले आ रहे थे। बीड़ाली ने अपने अनुचर को देखते ही पूछा— "क्यों, भाग रहे हो! क्या बात है!" मैं यह जानना चाहता हूँ कि श्वानकर्णी के आदमियों ने जब तुम्हें घेर लिया था, तब क्या हुआ!"

बिड़ाली अनुचर ने श्वानकर्णी के पहाड़ों के पास हुई लड़ाई के बारे में और जयमल्ल के वचन के बारे में बताकर कहा— "श्वानकर्णी ने कहा है कि यदि उसको मूलपुरुषों की पत्थर की गदा लाकर दे दी

गई, तो वह हमसे शत्रुता छोड़ देगा। जयमल्ल ने मुझे यह कहने को भेजा है कि तुम वह गदा लेकर आओ।"

पत्थर की गदा का नाम सुनते ही बीड़ाली ज़रा चौंका, उसने अपने अनुचरों की ओर घूरा। वे सब सिर झुकाये हुए थे। बीड़ाली ने अपने क्रोध को रोकते हुए कहा—"मैंने पहिले ही कहा था। परन्तु तुम में से एक को भी शायद अक़्ल नहीं है। अब कैसे बताऊँ कि पत्थर की गदा कहाँ है!"

"अगर उसके बस में हो, तो उस श्वानकर्णी को ही अपने पूर्वजों की गदा ले जाने के लिए कहिये। उस पत्थर के लिए पहिले ही हमारा एक बलवान और बहादुर आदमी मर ही चुका है।" बिड़ाली के अनुचरों में से एक ने कहा।

बीड़ाली अपना गुस्सा काबू न कर सका। उसने अपने हाथ के भाले को ज़मीन पर ठोककर कहा—"भले ही वह बलवान हो, क्या वह आग उगलनेवाले शेर को मार सकता है! उसी प्रयत्न में वह मारा गया और गदा भी चली गई।" वह कहता कहता एक क्षण रुका, फिर उसने कहा—"खैर, जाने दो, जो कुछ हुआ है, वह श्वानकर्णी को बता देंगे।"

"हम दस आदमी से अधिक नहीं हैं। शत्रु की गुफ़ा में कैसे जाएँ! वे तो सैकड़ों की संख्या में हैं। यदि उन्होंने हम पर हमला किया, तो हम क्या करेंगे!" एक ने बीड़ाली की ओर देखते हुए कहा।

"यही क्या तुम्हारी बहादुरी है! जब इतने डरपोक हो, तो उस गदा के लिए क्यों गये थे! खैर, इस समय उन सब बातों के बारे में बात करने की ज़रूरत नहीं है। केशव, जयमल्ल और जंगली

गोमान्ग, श्वानकर्णी से हमारी रक्षा कर सकते हैं। उनके हाथों में नये हथियार हैं—उन हथियारों का वे मुकाबला नहीं कर सकते।" बीड़ाली ने कहा।

बीड़ाली जब अपने आदमियों के साथ केशव और उसके साथियों के पास पहुँचा, तो वे श्वानकर्णी से बात कर रहे थे। बीड़ाली को आता देख, श्वानकर्णी ने दान्त पीसते हुए कहा—"देखो, ये पत्थर की गदा नहीं ला रहे हैं। उस हालत में हम उनसे कैसे सन्धि कर सकते हैं?"

जयमल ने बीड़ाली की ओर मुड़कर कहा—"क्यों बीड़ाली, मैंने तुम्हारे अनुचर से कहलाकर भेजा था कि तुम उस गदा को लाओ। नहीं मालूम तुम उसे क्यों नहीं लाये! क्या तुम श्वानकर्णी से सदा शत्रुता रखना चाहते हो?"

"मैं किसी से भी शत्रुता नहीं रखना चाहता, इस जंगल में किसी भी गिरोह से मेरी दुश्मनी नहीं है। श्वानकर्णी ने स्वयं मुझसे विरोध किया है। मैं उस गदा की तरह की बीस गदायें दे सकता हूँ। जो ये लोग कह रहे हैं, हमारे लोगों ने वह चुराया है, ठीक है।" बीड़ाली ने कहा।

"मुझे हमारे मूलपुरुष की गदा ही चाहिए। उसकी बहुत महिमा है। अगर तुम हजार गदायें भी देना चाहो, तो मैं नहीं मानूँगा।" श्वानकर्णी ने गुस्से में कहा।

"उसकी महिमा में विश्वास करके, हमारा आदमी झील की पासवाली गुफ़ा में आग उगलनेवाले शेर को मारने के लिए गया और स्वयं मारा गया।" बीड़ाली ने कहा।

"खैर, हटाओ, गदा कहाँ है?" जयमल ने पूछा।

हमारे जवानों के उकसाने पर उसने यह किया था।"

श्वानकर्णी के पास आकर जयमल ने कहा—"श्वानकर्णी, तुम बीड़ाली की बातों पर विश्वास कर सकते हो, यदि तुम्हें यह विश्वास है कि तुम्हारे मूलपुरुषों की गदा की इतनी महिमा है, तो उसे हम ला सकते हैं। तुम दोनों मैत्री से रहो।"

"बीड़ाली की बातों का विश्वास करने का मतलब होगा कि वह गदा आग उगलनेवाले शेर की गुफ़ा में ही रह गयी है। यह तो माना जा सकता है कि शेर ने आदमी को खा लिया होगा, पर यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि वह गदा भी खा गया होगा। उस शेर की गुफ़ा में घुसकर, उस गदा को कैसे लाया जाये!" श्वानकर्णी ने चकित होकर कहा।

"शायद अभी तक तुम हमारी शक्ति नहीं जानते। चलो, हमें उस की गुफ़ा दिखाओ।" कहकर, जयमल ने आगे दो कदम रखे। केशव और जंगली गोमान्य भी चले। बीड़ाली और श्वानकर्णी अपने साथियों के साथ जंगल में कुछ दूर जाने

"न गदा का पता है, न उसका ही कहीं पता है। लोगों ने उसका गुफ़ा में घुसते तो देखा है, पर उसे बाहर आते किसी ने नहीं देखा है।" बीड़ाली ने कहा।

"धोखा, मैं विश्वास नहीं करूँगा।" श्वानकर्णी चिल्लाने लगा।

जयमल, बीड़ाली को दूर ले गया, उसने उसे सच बताने के लिए कहा। बीड़ाली ने कसम खाकर कहा—"वह आदमी था तो हमारे ही गिरोह का, पर मैं उस गदा की चोरी के बारे में नहीं जानता।

के बाद, एक झील के पास पहुँचे। उस झील के पास एक ऊँचा पहाड़ था। उसमें बहुत सी गुफायें थीं। झील का पानी पर्वत के छोर को छू रहा था। जयमल ने देखा कि उस झील से एक नाला पहाड़ों की ओर बह रहा था।

"वह देखो। यह जो बड़ी गुफ़ा दिखाई दे रही है, वह ही शेर का निवास स्थान है। वहाँ जाकर कोई जीता वापिस नहीं आया है।" बीड़ाली ने कहा। श्वानकर्णी ने सिर हिलाकर, जयमल की ओर देखा। जयमल ने केशव और जंगली गोमान्न को थोड़ी दूर ले जाकर, इस बात पर चर्चा की कि उस गुफ़ा में प्रवेश किया जाये, शेर को मारा जाय या न मारा जाय। केशव और गोमान्न ने सलाह दी कि इतनी दूर आने के बाद पीछे मुड़कर जाना ठीक न था। पर चूँकि वह शेर आग उगलता था, क्या उसे हम अपने बाणों से मार सकेंगे? यह सन्देह हुआ उनको।

"कितना ही बल्वान कोई पशु न हो, उसको एक चोट में मारनेवाला विष मेरे पास है। यदि उस विष में बुना बाण मारा गया, तो शेर हमारा कुछ नहीं कर सकता। पर यदि बाण निशाने पर न लगा, तो हमारी मौत होकर रहेगी।" जंगली गोमान्न ने कहा।

"हम तीन हैं। क्या तीनों का एक ही साथ निशाना चूकेगा?" केशव ने कहा।

"मगर वह यकायक हम पर पेड़ों के पीछे से कूदेगा, तो क्या होगा?" गोमान्न ने पूछा।

"कहीं यह खतरा न आ जाये, इसलिए हम बहुत सावधानी से रहेंगे। अच्छा होगा, पहिले यह मालूम कर लिया

जाये कि वह शेर गुफ़ा में है कि नहीं!" जयमल ने कहा।

"यह जानना कोई बड़ी बात नहीं है। यदि किसी जानवर को—बकरी या भैंसे को, गुफ़ा की ओर भेजा गया, तो सच जाना जा सकता है। उनको देखकर शेर गुफ़ा से बाहर आयेगा। या ये जानवर उसकी गन्ध पाकर दूर भागेंगे" जंगली गोमान्य ने कहा।

यह सुझाव जयमल और केशव को भी भाया। श्वानकर्णी को यह बताने पर उसने अपने गिरोहवालों को भेजकर दस बकरी और कुछ बछड़े वहाँ मँगवाये। फिर उन सबको रस्सी में बाँधकर, झील के पार के पहाड़ पर भेजा। जन्तु झील में से तैरते हुए, शेर की गुफ़ा की ओर गये। गुफ़ा के पास गये ही थे कि वे डर गये। वे रस्सी तोड़कर, चिल्लाते पानी के किनारे किनारे तेज़ी से भागने लगे।

"इसमें सन्देह की गुँजाइश नहीं है कि शेर गुफ़ा में ही है। पर यह नहीं पता लगा कि वह जन्तुओं को पकड़ने के लिए गुफ़ा से बाहर क्यों नहीं आया!" बीड़ाली ने पूछा।

श्वानकर्णी ने ज़ोर से हँसते हुए कहा—"तुम्हारे गिरोहवालों ने उसे मनुष्य के माँस का स्वाद दिखा दिया है। अब सिवाय मनुष्यों के वह कुछ नहीं खाता है। अगर देखना चाहो, तो अपने एक आदमी को भेजकर देखो—वह गुफ़ा से बाहर कूदेगा।"

श्वानकर्णी की बात सुनकर, क्रुद्ध होकर बीड़ाली कुछ कहने ही वाला था कि जयमल ने उसे रोककर कहा—"अब तुम बात-बात पर यों न झगड़ो। उस शेर को मारकर, महिमावाली गदा लाने का भार

हमने अपने सिर पर ले लिया है। अब बस, तुम हमें एक तमेड़ बनाकर दे दो।"

श्वानकर्णी के आज्ञा देते ही उसके सेवक, कुछ सूखे लकड़ ले आये। उन्हें जड़ों से बाँधकर, झील में धकेला। इस बीच जंगली गोमान्ग ने बाणों के सिरों पर विष लगाया और उन्हें धूप में रख दिया। तीनों तमेड़ पर सवार हो गये और उसे चलाने के लिए चप्पू हाथ में ले लिये। जयमल्ल ने झील के किनारे खड़े बीड़ाली, श्वानकर्णी को सम्बोधित करके कहा— "चाहो, तो तुम यहाँ रहो, नहीं तो जहाँ चाहो चले जाओ। हमें कोई आपत्ति नहीं है। हम एक घंटे में वह गदा लेकर वापिस चले आयेंगे।"

श्वानकर्णी और बीड़ाली ने कुछ न कहा। उन्हें डर लगा कि जयमल्ल और उसके साथी फिर वापिस न आयेंगे। यह जाकर, जयमल्ल ने हँसकर कहा—"अरे घंटे की क्या ज़रूरत है। हम पन्द्रह मिनट में ही चले आयेंगे। पत्थर की गदा श्वानकर्णी को दे देंगे और शेर का चमड़ा बीड़ाली को दे देंगे।"

तमेड़ धीमे-धीमे झील पार करके, शेर की गुफ़ा के पास गई। "मुझे गुफ़ा में कुछ आहट-सी होती मालूम होती है।" जंगली गोमान्ग ने कहा।

"सन्देह की क्या ज़रूरत है हम गुफ़ा में ही जो जा रहे हैं।" केशव ने कहा। तमेड़ के किनारे पर लगते ही केशव तमेड़ से किनारे पर कूदा।

तीनों चुपचाप गुफ़ा के पास गये। उन्होंने अन्दर झाँककर देखा।

[अभी है]

परीक्षा फल

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारा। कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, मैं नहीं जानता कि तुम जैसे राजा भी कभी इस तरह की कठिन परीक्षा में से गुजरे हैं। राजा, उन लोगों को निर्मूल करने के लिए, जो उन्हें पसन्द नहीं होते, प्रायः कठिन परीक्षा देते हैं। इस सम्बन्ध में सुबुद्धि नामक मन्त्री की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

एक समय में, दक्षिण में, रत्नगढ़ पर सत्यजित नाम के राजा का राज्य था। वह धर्मपरायण और न्याय, अन्याय, विवेकी था। उसके अनुरूप मन्त्री था

सुबुद्धि। वह शासन में और प्रजा के हित के कार्यों में अद्वितीय था।
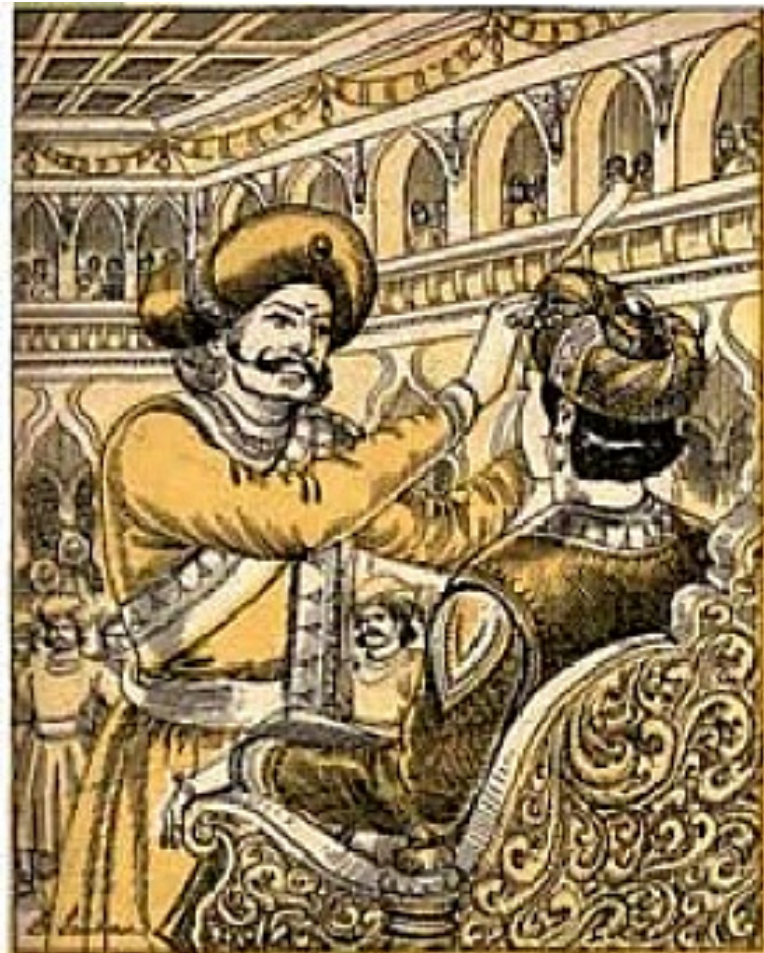
सत्यजित महाराजा के कमलाकर नाम का एक लड़का था। वह बिल्कुल पिता के विपरीत था। दुस्संगति के कारण उसमें कई कुटेव आ गये थे। ऐसा न हो कि कहीं वह पूरी तरह बिगड़ जाये, सुबुद्धि उसको कुछ कुछ नियन्त्रण में रखता आया था। इसलिए कमलाकर सुबुद्धि से बड़ा चिढ़ा हुआ था और उसकी चिढ़ धीमे धीमे बढ़ती जाती थी। राजा बनते ही, सुबुद्धि का सर्वनाश करने के लिए उसने निश्चय कर लिया था।

जल्दी वह समय भी आ गया। सत्यजित बूढ़ा हो गया, बीमार भी हो गया, फिर उसको अपने लड़के का दुर्व्यवहार भी सता रहा था। उसकी मृत्यु समीप आ गई थी। यह सोच कि गद्दी पर आते ही उसका लड़का बिल्कुल निरंकुश हो जायेगा राजा ने उसको सुधारने के लिए, सुबुद्धि को बहुत से अधिकार दिये। उसको यह भी हिदायत की कि वह उसके लड़के को अच्छे रास्ते पर लाये। इसके बाद राजा मर गया।

पिता गुजर गया था, फिर भी सुबुद्धि का पिंड न छूटा था। यह देख कमलाकर और भी चिढ़ा। उसका पिता सुबुद्धि को किस प्रकार के अधिकार दे गया था, सब दरबारी जानते थे। उन अधिकारों के बहाने, कमलाकर ने सुबुद्धि का सर्वनाश करने का एक उपाय सोचा।

राजा के दहन संस्कार आदि के बाद सुबुद्धि ने, उचित मुहूर्त में कमलाकर का पट्टाभिषेक करवाया। इसके बाद, कमलाकर

ने भरे दरबार में कहा—"सुबुद्धि बहुत समय से मेरे पिता के प्रधान मन्त्री रहे हैं। सब के मुँह यह सुना है कि वे बड़े बुद्धिमान हैं। परन्तु मैं उनकी बुद्धिमत्ता के बारे में कुछ भी नहीं जानता। इसलिए उनकी बुद्धिमत्ता परखने के लिए मैंने एक परीक्षा की व्यवस्था की है। इस कटोरे में दो कागज हैं, दोनों एक ही जैसे हैं। उनमें एक पर "हाँ" लिखा है और दूसरे पर "न" है। यदि सुबुद्धि इसमें से "हाँ" वाला कागज उठायेंगे तो इसका मतलब होगा कि वे बुद्धिमान हैं। यदि ऐसा न हुआ तो मैं इनको मन्त्री के पद से हटा दूँगा। यही नहीं, मेरे पिता को इतने समय तक धोखा देने के कारण सजा भी दूँगा। यदि इस परीक्षा के लिए मन्त्री मान गये, तो ठीक है नहीं तो वे भरे दरबार में यह स्वीकार करें कि वे अपने पद के योग्य नहीं हैं और सपरिवार देश छोड़कर चले जायें। इस विषय में मन्त्री क्या कहना चाहते हैं!"

दरबारी स्तब्ध थे। वे ताड़ गये कि नया राजा, पुराने मन्त्री से चिढ़ा हुआ था। सब का अनुमान था कि इस तरह की क्रूर अन्यायपूर्ण परीक्षा के लिए सुबुद्धि तैयार नहीं होगा और सकुटुम्ब देश छोड़कर चला जायेगा। पर जब सुबुद्धि ने कहा—"मुझे महाराजा की परीक्षा स्वीकार है" तो सब को आश्चर्य हुआ।

कमलाकर ने सुबुद्धि की ओर एक बार घूरा। फिर उसने कटोरे का ढक्कन उठाकर कहा—"तो कागज निकालिए।" सुबुद्धि ने एक कागज उठाया, बिना उसको खोले ही उसने उसको फाड़कर फेंक दिया।

दरबार में शोर मचा। "महामन्त्री ने जो कागज उठाया था, उस पर क्या लिखा था, किसी को नहीं बताया। उन्होंने भी नहीं देखा था।"

"दूसरा कागज कटोरे में है ही, उसको देखकर क्या नहीं जाना जा सकता कि मैंने कौन-सा कागज उठाया था!" सुबुद्धि ने कहा। जब वह कागज देखा गया तो उस पर "न" लिखा था।

कमलाकर ने सबको चुप रहने का ईशारा किया। "सुबुद्धि उत्तीर्ण हो गये हैं। उनसे अच्छा मन्त्री मुझे नहीं मिल सकता। मैं चाहता हूँ कि वे ही शासन कार्य सम्भालें।" सब बड़े खुश हुए। उसके बाद कमलाकर जो कुछ सलाह सुबुद्धि देता, उसका पालन करता, उसका शासन, उसके पिता के शासन से भी अच्छा समझा गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मैं अपने सन्देह एक एक करके सुनाता हूँ। सुबुद्धि जैसा बुद्धिमान उस दुष्ट राजा को छोड़कर क्यों नहीं चला गया! क्यों उस निकृष्ट परीक्षा के लिए मान गया! इसलिए कि वह मन्त्री के पद पर रहना चाहता था! खैर, जाने दो! क्यों सुबुद्धि को यह भरोसा था कि वह ठीक कागज निकाल पायेगा! इस भरोसे के कारण ही तो उसने उस कागज को देखा तक न था, जो उसने निकाला था। उसमें क्या कोई दिव्य दृष्टि थी! एक और सन्देह! कैसे कमलाकर की चिढ़ परीक्षा के बाद जाती रही! उसका सुबुद्धि की सलाह पर राज्य करने का क्या कारण था! सुबुद्धि क्या कोई वशीकरण विद्या जानता था! यदि तुमने इन प्रश्नों का जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

तब विक्रमार्क ने यों कहा—"सुबुद्धि जानता था कि उसके सर्वनाश के लिए ही कमलाकर ने परीक्षा का बहाना किया था। यदि वह सपरिवार देश छोड़कर चला जाता, तो वह मृत राजा को दिया हुआ वचन पूरा नहीं कर रहा होता। मृत राजा ने चाहा था न कि वह कमलाकर को अच्छे मार्ग पर लाये। सुबुद्धि ने न सोचा था कि वह ठीक कागज निकाल सकेगा। क्योंकि जो कुछ कागज निकालता वह गलत ही होता। जब उसका सर्वनाश ही, कमलाकर करना चाहता था और परीक्षा केवल नाम मात्र थी इसलिए दोनों कागजों पर "न" ही लिखा होगा, यह सुबुद्धि जानता था। इसलिए बिना खोले ही, उसने उसको फाड़ दिया था। यह करके उसने कमलाकर की प्रतिष्ठा की रक्षा की। न फाड़ता तो सुबुद्धि यह अन्याय निरूपित कर देता कि दोनों कागजों पर "न" ही लिखा था। ऐसा करने से पट्टाभिषेक के दिन लगा कलंक, राजा पर जीवन भर रहता। यह जानते ही कि सुबुद्धि ने उसके मान की रक्षा की थी कमलाकर के मन में परिवर्तन आ गया। तब तक कमलाकर बुरे कामों को करने से ही रोकता आया था, जब उसको मालूम हो गया कि वह उसकी चिढ़ भी छुरा सकता था, तो सुबुद्धि सहर्ष अपनी हार मान गया। इसलिए उसको उसने मन्त्री रहने दिया।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

[श्री एन. लक्ष्मीनारायण की रचना के आधार पर]
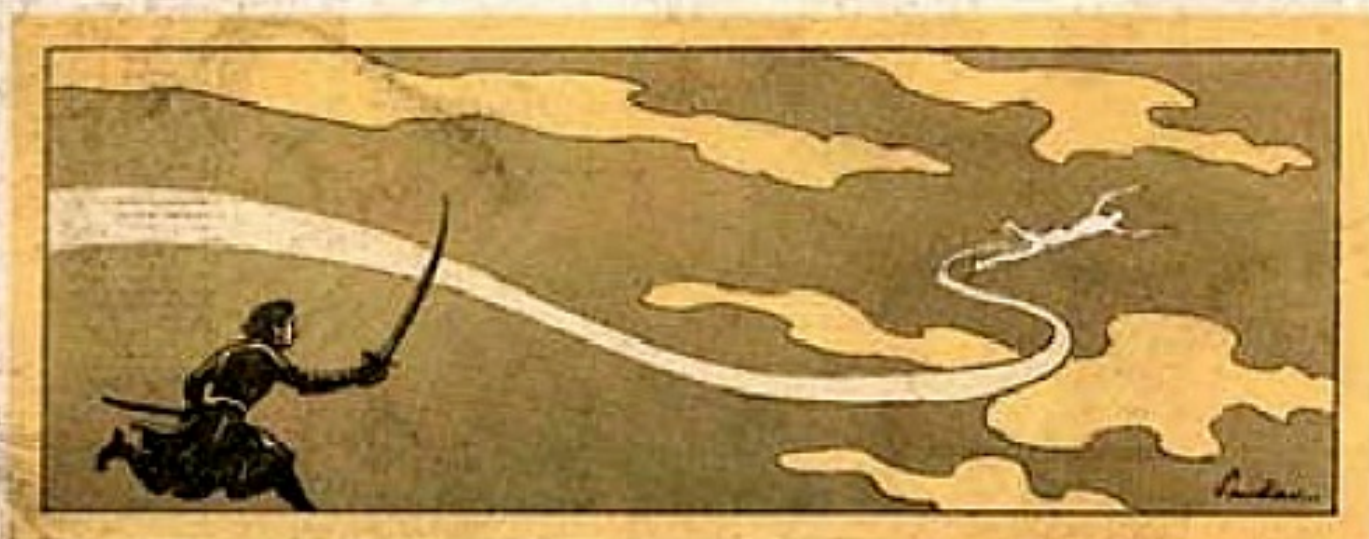
मजनू-प्रेम ★ [रामतीर्थ कथा]

मजनू का प्रेम आदर्श प्रेम समझा जाता है। वह अपनी प्रेयसी के लिए, तड़प तड़प कर दीवाना हो गया। वह उसके लिए दर दर भटकता रहा। उसको हर पेड़, प्राणी में अपनी प्रेयसी ही दिखाई देती।

आखिर, मजनू जंगल में मूर्छित हो गया। वहाँ उसके पिता ने उसका मुँह पोंछकर पूछा—"क्यों बेटा, मुझे पहिचाना?" परन्तु मजनू के लिए सिवाय अपनी प्रेयसी के कोई न था। वह अपने पिता को भी न पहिचान सका।

"मैं तेरा पिता हूँ बेटा।" पिता ने कहा।

"पिता कौन होता है?" मजनू ने पूछा। मजनू मरकर खुदा के पास गया। खुदा ने उससे पूछा—"अरे मूर्ख, यदि तुमने मुझे उस प्रेम का जो तुमने अपनी प्रेयसी को दिया था हज़ारवाँ हिस्सा भी दिया होता, तो तुम्हें फरिश्ता बना देता।

मजनू ने खुदा से कहा—"तुमने यह कहा फिर भी मैं तुम्हें माफ करता हूँ, यदि तुम मेरा प्रेम चाहते हो तो तुम्हें मेरी प्रेमिका के रूप में आना होगा।"

उपदेश और उनके अर्थ

बच्चों की बातें सुनकर, अन्दर आता आता बाबा चौंका। वे जीवात्मा, परमात्मा, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, कुंडलिनी योग शब्दों का उपयोग करके आपस में कुछ तर्जन भर्जन कर रहे थे।

"तुम क्या बहस कर रहे हो?" बाबा ने पूछा।

"दादी के साथ हम भी स्वामी को देखने गये थे बाबा, स्वामी का उपदेश हमने भी सुना है।" बच्चों ने खुशी खुशी कहा।

"क्या उपदेश का अर्थ तुम समझ सके?" बाबा ने पूछा।

"नहीं तो" बड़े ने कहा।

"श्लोक तो बिल्कुल ही समझ में नहीं आये।" दूसरे ने कहा।

"यानि बनिये रमेश के लड़के की तरह बस उपदेश सुन आये।" बाबा ने जोर से हंसते हुए कहा।

"रमेश कौन है बाबा? उसके लड़के ने क्या किया था? उपदेश क्या हैं बाबा, किस स्वामी ने उपदेश दिया था?" बच्चे बाबा से पूछने लगे।

यह देख कि भोजन का अभी समय नहीं हुआ था, बाबा कहानी सुनाने के लिए बैठ गया। बच्चों के बैठ जाने पर, सुंघनी निकालकर उसने यों कहानी शुरु की—

"एक कस्बे में रमेश नाम का एक बनिया था। वह बड़ा धनी था। व्यापार करता था। यही नहीं, वह व्याकरण और तर्क में भी बड़ा पंडित था। जब बातें

करता, तो उनमें गूढ़ार्थ होता। इसलिए उसकी बातों का आनन्द लेने बड़े बड़े पंडित दूर दूर से आया करते और उसके यहाँ ठहरा करते।

इस रामेश का एक लड़का था। उसका नाम कामेश था। न मालूम क्यों उसे न पिता की कार्य कुशलता ही मिली न उसका पान्डित्य ही। उसकी पढ़ाई भी मामूली था। व्यापार में अनुभव पाने के लिए जो कुछ पिता कहता, किया करता। पिता ने उसको व्यापार के रहस्य भी न बताये। ऊपर ऊपर का काम ही बताया करता।

कामेश अक्लमन्द तो ज्यादह न था, पर उसे पिता की बात पर बड़ा गौरव था। जो कुछ काम वह सौंपता, वह किया करता।

इस तरह कुछ समय बीता। रामेश को बीमारी हुई और उसने चारपाई पकड़ी। लखपति था, इसलिए चिकित्सा में कोई कमी नहीं हुई। परन्तु रोग दूर नहीं हुआ।

जब उसे लगा कि वह जीवित न रहेगा, तो उसने कामेश को बुलाकर कहा—"बेटा, तुम्हें हमारे व्यापार के बारे में सब कुछ मालूम है। पर मैंने तुम्हें कभी क्रय-विक्रय का रहस्य नहीं बताया। वह अब बताता हूँ, सुनो। ज्यादह खरीद कर, कम पर बेचो। इस प्रकार करने से व्यापार की वृद्धि होगी।" यह कहने के कुछ समय बाद, रामेश मर गया।

पिता के मर जाने के बाद सारी जिम्मेवारी कामेश पर पड़ी। उसने पिता की कही बात पर सोचा विचारा। पिता ने यही तो कहा था कि बड़े दाम पर खरीद कर, कम दाम पर बेचो।" बड़े से बड़ा मूर्ख जान सकता था कि ऐसा करने से

नुक्सान ही होगा। कामेश बड़ा अक़्लमन्द तो नहीं था, पर इतना ज़रूर जानता था कि व्यापार के लिए यह आवश्यक था, कि कम दाम पर खरीदा जाये और अधिक दाम पर बेचा जाये।

चूँकि वह पिता की बात मानता था, इसलिए वह बड़े दाम पर खरीदने लगा और कम दाम पर बेचने लगा। फिर क्या था! बिक्री ज़ोर से शुरु हुई। साथ साथ खूब नुक्सान भी हुआ। साल होते होते कामेश अपनी सारी सम्पत्ति खो बैठा।

कामेश न सोच सका कि अब क्या किया जाय? घर खाली हो गया था। तिजोरी खाली हो गई थी, तिजोरी में बस पुराने कागज़ बच रहे थे। उनको पलटते समय उसको एक चिट्ठी मिली। उसे, उसके पिता ने उसके नाम लिखा था। उसमें लिखा था। "लक्ष्मी, कालवाहन के बीच में खोदा गया, तो खज़ाना मिलेगा।"

यह बात कामेश को समझ में न आयी। लक्ष्मी कालवाहन कहाँ है? उनके बीच में कैसे खोदा जाय? कामेश कस्बे के बहुत से पंडितों के पास गया। "हमारे पिताजी लिख गये हैं, कि लक्ष्मी, कालवाहन के बीच में खोदने से लक्ष्मी मिलेगी। क्या आप बता सकते हैं कि लक्ष्मी कालवाहन कहाँ है?" कोई नहीं बता सका। सब ने सोचा कि धन क्या गया कि इसकी अक़्ल भी चली गई है। जब वह बड़े दाम पर खरीदकर कम दाम पर बेच रहा था तभी लोगों ने उसे पागल बताया था। पागल तो था ही, अब भिखारी भी है, अगर कतई मूर्ख हो गया है, तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है!

कामेश इस हालत में था कि उसके घर दूर के प्रान्त से एक तर्क पंडित आया। वह जब रामेश जीवित था, तब दो चार बार आया था और उसके पान्डित्य को देखकर, प्रभावित और आनन्दित हुआ था। उसे न मालूम था कि रामेश गुजर गया था। उसे दुख हुआ कि रामेश जीवित न था और उसका लड़का गरीब हो गया था। "इतनी बड़ी सम्पत्ति इतनी जल्दी कैसे खतम हो गई?" पंडित ने कामेश से पूछा।

"मेरे पिता जी ने मरते समय माल अधिक दाम पर खरीदकर, कम दाम पर बेचने के लिए कहा था। मैंने वही किया। नुक्सान हुआ। नुक्सान न आता तो क्या आता?" कामेश ने कहा।

पंडित ने नाक पर अंगुली रखकर कहा—"अरे पगले, तुम्हें जो पिता ने बताया था, वह तुम्हें बिल्कुल भी समझ में न आया। व्यापार करने वाला क्या कोई अधिक दाम पर खरीदकर, कम दाम पर बेचता है? मरते समय, तुम्हें वे इतनी मूर्खतापूर्ण सलाह देंगे, यह तुमने कैसे सोचा?"

"तो उनका मतलब क्या था?" कामेश ने पूछा।

"खरीदते समय, एक से कुछ अधिक दाम पर बेचते समय, एक से कुछ कम दाम पर बेचो। ऐसा करने से क्रय-विक्रय जल्दी होगा।" पंडित ने कहा।

पिता का उपदेश कामेश को अब समझ में आया। फिर वह उठकर गया और पिता का लिखा पुराना पत्र ले आया। उसे पंडित को दिखाकर उसने पूछा—"जरा, यह भी बताइये कि इसका क्या अर्थ है? मेरा भला होगा।"

पंडितने उस पत्र को पढ़कर कहा—"तुम्हारे घर गौवें हैं न?"

"सब बेच दी हैं।" कामेश ने कहा।

"क्या तुम बता सकते हो, वे कहाँ बाँधी जाती थीं?" पंडित ने पूछा।

कामेश उसको पिछवाड़े की ओर ले गया। "यहाँ, गौवें बंधती थीं और यहाँ, भैंसें।"

"इन दोनों के बीच खुदवाओ। तुम्हें खजाना मिलेगा। लक्ष्मी का अर्थ गौ है। कालवाहन का अर्थ भैंस है। समझे?" पंडित ने कहा।

कामेश ने जब खुदवाया, तो उसको बड़ा खजाना मिला। उसने उस पंडित को बहुत-सा सोना दिया। फिर उसने पिता की सलाह के अनुसार व्यापार किया और जितना खोया था, उससे दुगना कमाया। और फिर धनवान हो गया।

"इसका मतलब यह हुआ कि उपदेश सुनना काफी नहीं है। उसको समझना जरूरी है।" बाबा ने कहा।

कौन परोसे? कौन खाये?

भीम द्वारा अपमानित सोहनलाल साँप के स्वभाव का था। उसने भीम से बदला लेने की ठानी। इसलिए, उसने अपने लड़के सुब्बन्ना को बुलाकर कहा—"अरे, मैं कुछ दिन किसी और गाँव में रहूँगा। इस बीच तुम भीम को उसके ससुराल से भगा दो। इस तरह जब मेरा बदला निकाल लोगे, तभी मैं इस गाँव में पैर रखूँगा।"

"पिता जी बताइये, कैसे! जो आप कहेंगे, वही करूँगा।" सुब्बन्ना ने कहा। पिता, जो कुछ उसे बताना था, बताकर किसी और गाँव में चला गया।

सुब्बन्ना और भीम में कुछ कुछ मैत्री थी। इसलिए उसने भीम के पास आकर कहा—"जानते हो, जमीन्दार का जमाई बनने पर, सब मजाक कर रहे हैं।"

"मजाक कर रहे हैं! ऐसा मैंने कौन-सा काम किया है!" भीम ने पूछा।

"कुछ न करना ही तुम्हारा कसूर है। इज्जतवाला कोई भी आदमी, स्त्री का दिया हुआ, हाथ पर हाथ रखे निठल्ला बैठा बैठा नहीं खाता। वह पत्नी को खिलाता है। तुम पत्नी का खा रहे हो। तुम जैसे को देखकर सब हंस रहे हैं।" सुब्बन्ना ने कहा।

मैं हमेशा पत्नी का परोसा खाता हूँ। पर मैंने पत्नी को कभी कुछ न परोसा। मैं हाथी-सा हूँ, पर मैंने कभी कोई काम न किया। सुब्बन्ना कह रहा है कि इस तरह रहना इज्जत का काम नहीं है। यह सच ही होगा, इसलिए ही नानी ने मुझ से इतने सारे काम करवाने की कोशिश की

थी। नानी के पास खाना बनाना सीख लिया और उसके बाद, कुछ काम पा लिया, तो मैं भी इज्जत के साथ अपनी पत्नी को खाना दे सकूँगा, भीम ने सोचा।

भीम ने महालक्ष्मी से कहा—"मैं अपनी नानी के पास जा रहा हूँ। खाना पकाना सीखना है।" भीम ने कहा।

"अगर खाना बनाने का शौक है, तो मैं ही सिखाऊँगी।" महालक्ष्मी ने हँसते हुए कहा।

"यह इज्जत का काम नहीं होगा। जब तक मैं खाना बनाना न सीख लूँगा। तब तक मैं इस गाँव में न रहूँगा। सब मुझे देखकर हँस रहे हैं।" भीम ने कहा।

यह देख कि पति के सिर पर नया पागलपन सवार हुआ है महालक्ष्मी ने उससे पूछ ताछ की। भीम ने कहा—"मुझ से कुछ न पूछो। जब तक मैं अपना काम पूरा न कर लूँगा तब तक इस गाँव में पैर न रखूँगा।"

महालक्ष्मी कुछ न बोली। उसने उसको जाने दिया। जब जमीन्दार ने पूछा कि जमाई कहाँ थे, तो उसने कहा—"वे अपनी नानी को देखने गये हैं!"

भीम, भोजन के समय एक गाँव में पहुँचा। यह देख कि जमीन्दार का दामाद आया था, गाँव के मुखिया ने उसको अपने घर आतिथ्य दिया। मुखिया के साथ जब भीम खाने के लिए बैठा, तो मुखिया की पत्नी ने खाना परोसा। भोजन करते करते भीम ने पूछा—तुम्हारे घर में कौन भोजन बनाता है!"

"मेरी पत्नी बनाती है। क्यों क्या खाना ठीक नहीं बना है!" गाँव के मुखिया ने पूछा।

"नहीं, बहुत अच्छा है। क्या हमेशा वे ही रसोई करती हैं, आप कभी नहीं करते! यही जानने के लिए ही मैंने पूछा था।" भीम ने कहा।

गाँव के मुखिया ने आश्चर्य से कहा—"मैं और खाना! मैंने कभी नहीं बनाया है। मैं खाना बनाना जानता भी नहीं हूँ।" भीम चकित हुआ।

वहाँ से चलकर, भीम उस दिन रात को एक गाँव में गया। वहाँ भी ग्रामाधिकारी ने उसको न्योता दिया। वहाँ भी वही हुआ। ग्रामाधिकारी की पत्नी ने भोजन परोसा। उसने साफ़ साफ़ कहा कि उसने कभी खाना नहीं बनाया था।

भीम को गुस्सा आया। सुब्बन्ना ने उससे क्यों झूठ कहा था। यह बात पहिले मालूम करनी है।

भीम ने अपनी नानी को देखने का इरादा छोड़ दिया। अगले दिन सवेरे आते ही, वह अपने गाँव गया और सीधे सुब्बन्ना के घर पहुँचा। तभी सुब्बन्ना भोजन के लिए बैठा था। उसकी पत्नी खाना परोस रही थी।

"अरे सुब्बन्ना, तुमने मुझ से क्यों झूठ बोला था! कोई भी मर्द स्त्रियों को नहीं परोस रहा है। मैं देखकर आया हूँ। आखिर, तुम भी स्त्री का परोसा खा रहे हो, पत्नी को नहीं परोस रहे हो। मुझे दिखाओ कि कौन मेरा मजाक कर रहे हैं।" भीम ने सुब्बन्ना से जोर से पूछा।

"मैंने यह नहीं कहा था भीम" सुब्बन्ना कुछ कहने ही जा रहा था कि भीम ने कहा—"क्या तुमने नहीं कहा था कि इज़्ज़तवाले मर्द अपनी पत्नी को खाना देते हैं! तुमने नहीं कहा था! अब

बात बदलने की कोशिश कर रहे हो! कहते कहते भीम ने सुव्रता की चोटी पकड़ ली। सुव्रता को डर लगा कि भीम उसकी जान निकाल देगा। इसलिए वह जोर से चिलाया।

आस पास के लोग जमा हो गये। सब सुनकर, उन्होंने भीम से कहा—"सुव्रता की बात का मतलब था कि पति को पत्नी का भरण पोषण करना चाहिए। इसलिए कोई काम करना चाहिए।"

"सुव्रता ने वैसा क्यों नहीं कहा! क्यों उसने पत्नी को भोजन परोसने के लिए कहा। कहता कि काम करो, यह काफ़ी था।" यों खिझता खिझता भीम घर गया।

महालक्ष्मी ने उसे देखकर पूछा—"नानी के पास से वापिस आ गये!"

"उस सुव्रता ने मुझ से झूट कहा था। मुझे खाना बनाने की जरूरत नहीं है। मुझे काम करना है। तब तक मेरी कोई इज्जत नहीं है।" भीम ने कहा।

"जमीन्दारी काम की देख भाल करना क्या काम नहीं है! इधर उधर की बातें न सोचिये। उठिये, भोजन के लिए आइये। परोस रही हूँ।" महालक्ष्मी ने कहा।

यह जान भीम बड़ा खुश था कि उसके लिए, महालक्ष्मी को भोजन परोसना जरूरी न था। भोजन के लिए जाते हुए भीम ने कहा—"अब जमीन्दारी का कोई काम हो, तो मुझे सौंपो, मैं वह करके इज्जत कमाऊँगा।"

[अगले मास एक और घटना]

गन्धर्व सम्राट की लड़की

[६]

सम्राट की लड़की को देखते ही मूर्छित हसन को वृद्ध योद्धा कन्या सहलाकर होश में लायी। उसने जब उसके मूर्छित हो जाने का कारण पूछा, तो हसन ने कहा— "होने को तो यह हू बहू मेरी पत्नी है पर वास्तव में मेरी पत्नी नहीं है।"

यह सुन सम्राट की लड़की ज़ोर से हँसी "क्यों, यह आदमी अवश्य पागल है न! तुम्हारी बातों से लगता है कि तुम्हारी पत्नी की और मेरी शक्ल बहुत मिलती है। मगर थोड़ी असमानता भी कहीं दिखाई देती है। समानता कहाँ है और असमानता कहाँ है?" उसने पूछा।

"महारानी, आप में और मेरी पत्नी में किसी भी अंग में भेद नहीं है। फिर भी आप दोनों में कोई भेद है उसे मैं जान तो सकता हूँ पर ठीक तरह बता नहीं सकता।" हसन ने कहा।

इन बातों से सम्राट की लड़की को दो बातें साफ साफ मालूम हुईं। एक यह कि यह सुन्दर युवक उसको नहीं चाहेगा और उसकी पत्नी उसकी छः बहिनों में एक है। उसको हसन पर और उसके प्रेम के पात्र अपनी बहिन पर ईर्ष्या और गुस्सा आया। यह पता लगाकर कि बहिनों में से उसकी पत्नी कौन थी उसे और इस युवक को कठिन दन्ड देने की उसने ठानी।

उसने बुढ़िया की ओर मुड़कर कहा— "तुम बाकी छः द्वीपों में जाओ। मेरी छः बहिनों को बुलाकर लाओ। उनको देखे

अपनी सब से छोटी लड़की के जाने के लिए उसने आपत्ति प्रकट की। यह कहा कि उसे कई अपशकुन दिखाई दिये थे। उसने अपनी छोटी लड़की को न जाने के लिए कहा। "जब बहन ने मेरे लिए दावत दी है तो मैं जाये बगैर कैसे रहूँगी। मुझे उसको देखे दो वर्ष हो गये हैं। यदि मैं अब कहूँ कि मैं नहीं आऊँगी तो वे नाराज़ होंगी। जब मैं बहुत दिन तुम्हें न दिखाई दी थी तो तुम दुःखी हुए थे। पर मैं वापिस आ गई थी न! इस बार भी वैसे ही चली आऊँगी। फिर इस बार दूर भी नहीं जा रही हूँ। अपने ही द्वीपों में ही तो जा रही हूँ।" हसन की पत्नी ने अपने पिता गन्धर्व सम्राट से कहा।

दो साल हो गये हैं। कहो कि मैं उन्हें देखना चाहती हूँ। उनको अपने साथ ले आओ। देखो किसी को इस युवक के बारे में कुछ न मालूम हो।"

बुढ़िया को अपनी मालकिन की चाल समझ में नहीं आयी। वह जल्दी जल्दी एक एक द्वीप में गई। सम्राट की एक एक लड़की को लेकर उसकी सब से छोटी लड़की के पास गई। हसन की पत्नी यह लड़की ही थी। चूँकि यह सम्राट को सबसे अधिक प्यारी थी इसलिए वह भी उसके साथ रह रहा था।

इस शर्त पर कि वह अपने बहिन के यहाँ कुछ दिन ही रहेगी, पिता ने उसको जाने दिया। बुढ़िया छहों बहिनों को साथ लेकर नूरल्हादा के पास चली। उनके आने से पहिले नूरल्हादा ने बढ़िया कपड़े और गहने पहिने। वह ठाट से सिंहासन पर बैठी थी। उसके सामने हसन दयनीय शक्ल बनाये खड़ा था। खुली तल्वार

लिये, योद्धा कन्यायें उस पर पेहरा दे रही थीं। बुढ़िया ने जब आकर कहा कि बहिनें आ गई थीं, तो उसने एक एक को अन्दर भेजने के लिए कहा। छहों में बड़ी बहिन आयी। उसको अपनी बगल में बिठाकर नूरल्हादा ने हसन से कहा—"क्यों, यह तुम्हारी पत्नी है?"

"इनका सौन्दर्य वर्णनातीत है। फिर भी इसमें और पत्नी में फ़र्क है। भेद क्या है, मैं साफ़ साफ़ नहीं कह सकता।"

नूरल्हादा ने अपनी बहिनों को इसी तरह एक एक करके बुलाया। हसन को दिखाकर पूछा—"क्या यह ही तुम्हारी पत्नी है? इस तरह पाँच बहिनें आयीं। सब के बारे में हसन ने वही कहा, जो उसने पहिले पहल कहा था। अब हसन की पत्नी ही बाकी रह गई थी। उसको बुलाने के लिए नूरल्हादा ने बुढ़िया से कहा। वह अन्दर आयी। उसको देखते ही हसन चिल्लाकर नीचे गिर पड़ा। वह भी उसको देखकर अपनी बहिन के सिंहासन पर मूर्छित हो गई।

नूरल्हादा अपनी ईर्ष्या न छुपा सकी। "इस आदमी को ले जाकर नगर से बाहर फेंक दो।" उसने अपने सैनिकों को आज्ञा दी। उन्होंने हसन को ले जाकर, समुद्र तट पर फेंक दिया।

हसन की पत्नी के होश में आते ही, नूरल्हादा ने उससे कहा—"बेशर्म कहीं की। इस आदमी के साथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? बिना पिता जी से कहे, तुम उसकी पत्नी हो गई और अब उसे छोड़कर आ गई हो! दोनों तरफ़ से तुम बिगड़ी। तुमने अपने वंश पर जो कलंक लगाया है, उसे तुम्हें अपने रक्त से ही हटाना होगा।" फिर उसने

का उचित दण्ड कोई नहीं है, उसको कैसा प्राण दण्ड देना है, यह निर्णय करके तुम ही अमल में लाओ।

हसन जब होश में आया, तो वह समुद्र तट पर था। उसे अब कोई आशा न थी। उन भयंकर द्वीपों से बाहर जाने का मार्ग भी वह न जानता था। वह पागल की तरह उठा और इधर उधर चलने लगा। चलते चलते उसके मन में तरह तरह की बातें आने लगीं। जब मैं बेहोश था, तब क्या हुआ होगा! मैं समुद्र तट पर क्यों भेजा गया? इन प्रश्नों के साथ उसमें कुछ कुछ आशा भी उपजने लगी।

अपनी दासियों से कहा—"इसको खम्भे से बाँध दो। जब तक खून की बाढ़ न बहे, तब तक इसे पीटो।" फिर उसने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी। उसमें उसने अपनी बहिन की सारी कहानी बताई और यह भी लिखा कि उसे वह क्या दण्ड देने जा रही थी। उस चिट्ठी को उसने एक दूत के द्वारा पिता के पास भेजा।

यह चिट्ठी देखते ही, सम्राट के आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। परन्तु उसने जवाब में लिखा, तुम्हारे बहिन के अपराध

वह यों पैदल चला जा रहा था कि उसने करीब बारह वर्ष की दो लड़कियों को देखा, जो एक कुल्ले के लिए झगड़-सी रही थीं। उस पर कुछ अक्षर थे। कुछ सजावट भी थी। उसने उनको अलग करके पूछा—"क्यों झगड़ रहे हो?" वे दोनों कह रही थीं कि वह कुला उसको मिला था। हसन ने कहा—"मैं तुम्हारा झगड़ा निबटाऊँगा। मैं एक पत्थर फेंकूँगा। जो पहिले पकड़कर

लायेगी उसका ही यह कुल्ला होगा। ठीक है न?" वे इसके लिए मान गईं।

हसन ने एक पत्थर फेंका। दोनों लड़कियाँ उसके लिए भागीं। वह तब तक कुल्ला सिर पर रखकर खड़ा रहा। जल्दी ही दोनों भागी भागी आयीं। एक के हाथ में पत्थर था। उस लड़की ने कहा—"यह लो, मैं जीती। तुम कहाँ हो!" हसन को यह देख आश्चर्य हुआ कि वे दोनों उसको खोज रही थीं। "वे तो अन्धी नहीं हैं। क्यों इधर उधर मुझे खोज रही हैं। मैं यहीं तो हूँ।" यह सोच वह चिल्लाया—"मैं यहीं हूँ।"

जिस तरफ से आवाज़ आई थी, उस तरफ़ बच्चों ने देखा। पर जब वह न दिखाई दिया, तो डरकर वे रोने लगीं। हसन ने उसको छूकर पूछा—"क्यों यों रोती हो!" यह सुन उनको और डर लगा और वे ज़ोर से भागने लगीं।

"अरे....यह तो कोई जादू का कुल्ला मालूम होता है, इसको पहिनने से शायद अदृश्य हो जाते हैं।" हसन ने सोचा। अब वह छुपा छुपा जा सकता था और

अपनी पत्नी को देख सकता था। उसे इतनी खुशी हुई कि खुशी में उसने नाचना चाहा। वह तुरत नगर में गया और बुढ़िया के लिए खोजने लगा। उसको एक कमरे में बाँधकर छोड़ दिया गया था। यह निश्चित रूप से जानने के लिए कि वह अदृश्य था कि नहीं, उसने एक कोने में रखे चीनी की बर्तन को धड़ाम से तोड़ डाला। बुढ़िया ने इधर उधर देखा, जब उसे कोई न दिखाई दिया, तो वह जोर से चिल्लाई—"भूत, तुम कौन हो!"

"मैं भूत नहीं हूँ। हसन हूँ। तुम्हें छुड़ाने के लिए आया हूँ।" कहकर हसन ने सिर पर से कुल्ला उतारा।

"अरे, हसन तुम भी कितने अभागे हो। हमारी रानी को इसका दुःख रहा कि तुमको उसने जीते जी छोड़ दिया था, तुम्हें पकड़ लाने के लिए उसने सिपाही भेजे हैं। तुम जल्दी कहीं भाग जाओ।" बुढ़िया ने कहा। उसने उसे यह भी बताया कि उसकी पत्नी को क्या दण्ड दिया जा रहा था।

"मुझे! मेरी पत्नी को और तुम्हें बस खुदा ही बचायेंगे। इस कुल्ले को देखो। यह जादू का कुल्ला है। इसे सिर पर रखकर मैं कहीं भी जा सकता हूँ। मुझे कोई नहीं देख सकता।" हसन ने कहा।

बुढ़िया यह सुनकर बड़ी खुश हुई। "तो मुझे छुड़ाओ। मैं तुम्हें वह जगह दिखाऊँगी जहाँ तुम्हारी पत्नी को बाँधा गया है।" हसन ने उसके बन्धन तोड़ दिये। अपने सिर पर कुल्ला रखकर उसने बुढ़िया का हाथ पकड़ा। तुरत वह भी उसके साथ अदृश्य हो गई।

बुढ़िया उसको एक काली कोठरी में ले गई। हसन की पत्नी उसी में बन्धित थी। वह दीन स्थिति में थी। उसने यह सोचा तो कि उसे यकायक पत्नी के सामने प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए ताकि वह घबरा न जाये पर उसकी दीन स्थिति को वह न देख सका। उसने सिर पर से कुल्ला उतार कर उसका आलिंगन किया। वह अपने पति को देखते ही उसके हाथों में मूर्छित हो गई।

हसन ने उसके बन्धन काट दिये। बुढ़िया की सहायता से उसकी सेवा शुश्रुषा की और उसको होश में लाया। उसने धीमे से आँखें खोलकर कहा—"मुझे नहीं मालूम कि तुम आकाश से उतरे हो या भूमि से ऊपर आये हो। मुझे मेरी किस्मत के हाथ छोड़ जिस रास्ते आये हो उस रास्ते चले जाओ। कौन मुकद्दर को रोक सकता है। जब मेरी बहिन मुझे मरवा रही होगी तब तुम मुझे न देख सकोगी।"

"अरी पगली! मैं तुमको बागदाद ले जाने के लिए आया हूँ। हसन ने कहा।" उसकी पत्नी को विश्वास नहीं हुआ।

"तुम्हें और इसे बुढ़िया को साथ लिए बगैर मैं इस महल से नहीं जाऊँगा। यह कुल्ला देखो।" कहकर उसने उसकी महिमा पत्नी को दिखाई।

हसन की पत्नी ने आनन्द और पश्चात्ताप में आँसू बहाते हुए कहा—"तुम्हारे इन सब कष्टों का कारण मेरा बागदाद से भागना ही है। मुझे मालूम है मैंने कितना खराब काम किया है। मुझे इसलिए बुरा भला न कहो।"

"नहीं, तुम्हें अपने साथ ले जाकर बगदाद में छोड़ना ही मेरी गलती है।

अब फिर कभी ऐसा काम नहीं करूँगा।" हसन ने कहा।

अब उसने कुल्ला पहिना और एक हाथ से बुढ़िया को और दूसरे हाथ से पत्नी को पकड़ा, तो तीनों अदृश्य हो गये। उसी हालत में राजमहल से निकल गये और कोई भी उनको देख न पाया। वे सब मिलकर उस जगह गये जहाँ हसन की पत्नी ने अपने बच्चे छुपा रखे थे। तासीर और मन्सूर को देखते ही हसन का दिल बल्लियों उछलने लगा।

बुढ़िया ने बच्चों को अपने कन्धे पर चढ़ा लिया। फिर हसन की पत्नी अदृश्य होकर, तीन पक्षियों के चोगे चुराकर लाई। तीनों, वे चोगे पहिनकर, भयंकर वाक वाक द्वीप से, हमेशा के लिए भाग गये। वे सीधे जाकर बगदादवाले अपने मकान के ऊपर मंड़राये। वे फिर हसन की माँ के पास पहुँचे। वह पहिले ही बूढ़ी थी। अब रोते रोते उसकी नजर भी चली गई थी। वह अब और तब की हालत में थी। हसन ने उसके किवाड़ खटखटाकर कहा—"माँ, दरवाज़ा खोलो। अच्छी खबर है।" यह सुन उसकी जान में जान आई। वह झट उठकर आई। किवाड़ खोले, ज्योंहि उसने अपने लड़के, बहू और पोतों को देखा, तो वह आनन्द में मूर्छित हो गई।

हसन ने उसकी सेवा शुश्रुषा की तो उसको होश आ गया। उसकी पत्नी ने, अपनी सास से, जो गल्ती उसने की थी, उसके लिए माफ़ी माँगी। जो कुछ गुज़रा था हसन ने अपनी माँ से कहा। फिर सब सुख से रहने लगे। [समाप्त]

चाणक्य की कथा

चणक गाँव में चणक नाम का एक ब्राह्मण रहा करता था। वह जैन था। उसका पत्नी का नाम चणेश्वरी था। उनके एक लड़का हुआ। जो बाद में चाणक्य नाम से प्रसिद्ध हुआ।

चाणक्य और बच्चों की तरह पैदा नहीं हुआ था। पैदा होते ही उसके सब दान्त थे। मुनियों ने यह सुनकर कहा कि ऐसे पैदा होनेवाले राजा होते हैं। उसका पिता तो इहलौकिक सुख से पारलौकिक सुख की अधिक आँकाक्षा रखता था, इसलिए उसने यह सोच कि लड़के के लिए इहलौकिक सुख इतने अच्छे न थे, उसके दान्त निकलवा दिये। इस प्रकार करने से मुनियों ने फिर बताया कि वह परोक्ष रूप से राज्यपालन करेगा।

चाणक्य ने समस्त शास्त्रों का अध्ययन किया। बड़े होकर उसने एक ब्राह्मण कन्या से विवाह किया। एक बार चाणक्य की पत्नी अपने भाई के विवाह के अवसर पर माइके गई। वहाँ उसकी बहिनें भी आयीं। उनके पति अमीर थे। इसलिए उन्होंने उसकी हीन स्थिति का उपहास किया। यों अपमानित होकर जब उसकी स्त्री घर आयी, तो जो कुछ हुआ था वह पूछ-ताछ कर चाणक्य ने जाना। फिर वह धनार्जन के लिए निकल पड़ा।

यह जानकर कि पाटलीपुत्र का राजा नन्द योग्य ब्राह्मणों का अधिक सत्कार करता था, चाणक्य उसके दरबार में गया और वहाँ एक बड़े आसन को खाली

देखकर, उस पर बैठ गया। वह महाराजा नन्द का आसन था। थोड़ी देर बाद, महाराजा नन्द और उसके लड़के आये। वहाँ उपस्थित सेवक ने चाणक्य को एक और आसन दिखाया। बल्कि उसने अपना जलपात्र, छड़ी, रुद्राक्ष माला और यज्ञोपवीत एक-एक आसन पर रखा। सेवक यह सब देख चुप न रह सका। उसने चाणक्य को बाहर धकेल दिया। चाणक्य को बड़ा गुस्सा आया। उसने प्रतिज्ञा की कि वह नन्द राज्य का निर्मूलन कर देगा और वह पाटलीपुत्र छोड़कर चला गया।

चाणक्य जानता था कि एक और के द्वारा राज्यपालन उसके भाग्य में लिखा था, वह एक ऐसे व्यक्ति की खोज करने लगा, जो उसका प्रतिनिधि होकर राज्य कर सके। वह घूमता घूमता मयूर पोषकों के गाँव गया। वे राजा के मोरों को पालते थे। गाँव के मुखिया की लड़की गर्भवती थी और वह चान्द को पीने के लिये छटपटा रही थी, यह चाणक्य को मालूम हुआ।

"बशर्ते उसके पैदा होने वाले लड़के को मुझे पालने दिया गया तो मैं उसकी इच्छा पूरा कर दूँगा।" चाणक्य ने गाँव के मुखिया से कहा।....इस के लिए, गाँव का मुखिया और उसकी स्त्री भी मान गई।

चाणक्य ने एक झोंपड़ी बनवाई और उसकी छत पर एक छेद करवाया। रात के समय, उसमें से जहाँ किरणें आती थीं, वहाँ उसने दूध का एक प्याला रखा। फिर उसने गर्भवती को वहाँ ले जाकर कहा—"यह देखो चन्द्रमा, इसे पी जाओ। जब उसने इस भ्रम को सच मानकर दूध पिया तो छत पर एक आदमी वह छेद धीमे-धीमे बन्द करता गया। गर्भवती स्त्री को यह जान सन्तोष हुआ

कि वह चान्द को पी गई थी। इसलिए उसके लड़के का नाम चन्द्रगुप्त रखा गया। इसके बाद, चाणक्य धनार्जन के लिए घूमने लगा। उसे उस गाँव में फिर आने के लिए कुछ समय लगा। आते आते उसको कुछ बच्चे दिखाई दिये। उनमें चन्द्रगुप्त भी था। वह राजा की तरह व्यवहार कर रहा था और बाकी उसे राजा मान भी रहे थे। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को नहीं पहिचाना। पर उसे देखकर वह खुश हुआ। उसकी शक्ति की परीक्षा के लिए उसने उससे दान माँगा।

"वह जो गौवों का झुन्ड दिखाई दे रहा है उसे ले जाइये। यदि आप यह कहेंगे कि मैंने दिया है, तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होगी।" चन्द्रगुप्त ने कहा। चाणक्य खुश हुआ। उसने औरों से पूछ-ताछ करके जान लिया कि वह ही चन्द्रगुप्त था। "जब तुम राजा हो तो तुम्हारे पास राज्य होना चाहिए न! आओ मेरे साथ, मैं तुम्हें राज्य दिलवाऊँगा।" कहकर वह चन्द्रगुप्त को अपने साथ ले गया।

चाणक्य ने एक सेना जमा की और उस सेना को लेकर, उसने पाटलीपुत्र को घेर लिया। राजा की सेना ने चाणक्य की छोटी-मोटी सेना को हरा दिया। नन्द के सैनिक उनका पीछा करने लगे। चाणक्य और चन्द्रगुप्त जब भागे-भागे एक तालाब के पास पहुँचे, तो एक सैनिक उनके पास आया। तब चाणक्य ने एक चाल सोची। वह स्वयं तालाब के किनारे तपस्वी की तरह बैठ गया और उसने चन्द्रगुप्त को पानी में उतरने के लिए कहा।

सैनिक ने चाणक्य के पास आकर पूछा—"क्या इस तरफ कोई भागता भागता आया था?" चाणक्य ने पानी

में खड़े चन्द्रगुप्त की ओर इशारा किया। तुरत सैनिक घोड़े पर से उतरा। तलवार पास रखकर, पानी में उतरने के लिए अपना कवच उतारने लगा। इसी समय चाणक्य उठा। सैनिक की तलवार से ही उसने उसका गला काट दिया। चाणक्य और चन्द्रगुप्त उसके घोड़े पर सवार होकर भागने लगे। तब चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से पूछा—"जब मैंने तुम्हें उस सैनिक को दिखाया था, तब तुमने क्या सोचा था?"

"मैंने यही सोचा कि जो कुछ करना है, वह गुरु जानते ही हैं।" चन्द्रगुप्त ने कहा। चाणक्य इस उत्तर से यह ताड़ गया कि यदि चन्द्रगुप्त राजा हुआ और वह उसका मन्त्री बना, तो वह उसका आज्ञाकारी रहेगा।

इस बीच एक और आश्विक उनको खदेड़ता आया। चाणक्य ने उसको भी एक चाल चलकर मार दिया। उसने एक धोबी से कहा—"राजा, तुम धोबियों पर नाराज हैं। तुम्हें पकड़ने के लिए सैनिक भेज रहे हैं।" उसको डराकर उसने भेज दिया। उसकी जगह स्वयं कपड़े धोने लगा। चन्द्रगुप्त को पानी

में जाने के लिए कहा। दूसरे आधिक के मरने पर वे फिर भागने लगे।

भूखे प्यासे वे उस दिन शाम को एक गाँव में पहुँचे। वे इस आशा में घूम रहे थे कि कौन उन्हें भोजन देगा कि उन्होंने एक घर एक बात देखी। एक गरीब बूढ़ी, अपने बच्चों के लिए भोजन बनाकर परोसकर बैठी थी। एक लड़के ने भोजन छुआ और तपाक से हाथ उठा लिया। यह देख उसकी माँ ने कहा—"यह क्या, तुम भी चाणक्य की तरह बुद्धू मालूम होते हो।"

वह गरीब स्त्री उसको जानती तक न थी, क्यों उसने ऐसी बात कही यह जानने के लिए चाणक्य उस घर में गया। उसने इसका कारण पूछा। "इसने एक तरफ़ से ठंडा होता भोजन नहीं खाया, ठीक थाली के बीच में इसने हाथ रखा। चाणक्य ने भी तो ऐसी ही बेवकूफ़ी की है। आसपास की ज़मीन न जीतकर, सीधे उसने जाकर राजधानी पर ही हमला बोल दिया।" चाणक्य के लिए यही अच्छा पाठ था। वह पर्वत प्रान्त में गया। वहाँ के राजा पर्वतक से उसने दोस्ती की। सन्धि के अनुसार

पर्वतक को, नन्द राजा को जीतने के लिए सहायता करनी थी और इसके बदले चाणक्य को जीतने पर आधा राज्य देना था। फिर चाणक्य और पर्वतक मिलकर पाटलीपुत्र के आसपास के ईलाके पर आक्रमण करने लगे। एक नगर उनके सामने नहीं झुका। चाणक्य को न सूझा कि उसको कैसे जीता जाये। उसने त्रिदण्डी सन्यासी का वेष पहिनकर नगर में प्रवेश किया। नगर में सप्तमातृकालय था। वहाँ की प्रजा का विश्वास था कि उस आलय की सात देवियाँ उस नगर की रक्षा करती थीं। शहर के घेरे के कारण लोग पहिले ही ऊबे हुए थे, इसलिए उन्होंने एक सन्यासी को देखकर पूछा—"स्वामी, यह घेरा कब खतम होगा!"

"अरे भाई जब तक सप्त मातृक आलय को नहीं छोड़ देंगे, तब तक यह घेरा समाप्त नहीं होगा।" चाणक्य ने उनसे कहा। मूढ़ प्रजा ने उसकी बात का विश्वास कर लिया और आलय से सप्त मातृओं की मूर्तियाँ निकलवायीं। चन्द्रगुप्त और पर्वतक को चाणक्य ने संकेत किया। वे कुछ दूर सेना को इस तरह ले गये, जैसे घेरा छोड़कर जा रहे हों। नगरवासी यह जान बड़े खुशी हुए कि घेरा खतम हो गया था। जब वे खुशियाँ मना रहे थे, तो अचानक सेना ने नगर पर आक्रमण किया और उसको बश में कर लिया।

आसपास का ईलाका जीतकर, चाणक्य ने पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया। इस बार नन्द युद्ध में हार गया और चाणक्य ने नन्द को जीवित छोड़ते हुए कहा—"तुम देश छोड़कर चले जाओ। एक रथ में तुम जितनी सम्पत्ति ले जा सको, उतनी ले जाओ।" नन्द रथ में अपनी दोनों पत्नियाँ, अपनी लड़की दुर्धरा
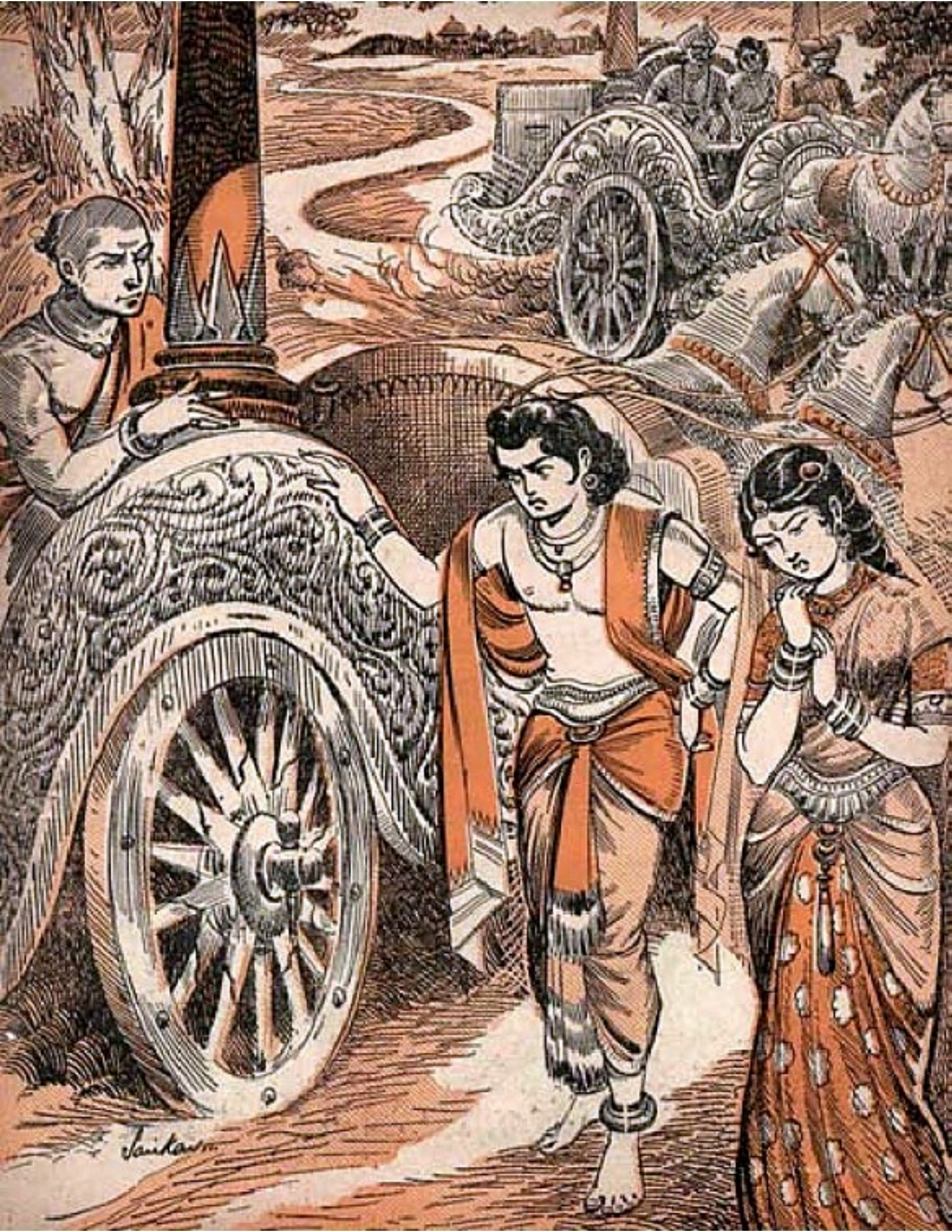
को बिठाकर अमूल्य आभूषण लेकर निकल पड़ा। रास्ते में उनको चन्द्रगुप्त रथ पर सवार होकर आता हुआ दिखाई दिया। चन्द्रगुप्त को देखते ही दुर्धरा को उस पर प्रेम हो गया। अपनी लड़की की मन की बात जानकर कहा—"बेटी, अगर तुम स्वयंवर करना चाहो, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

पिता के यह कहते ही दुर्धरा अपने पिता के रथ से उतरी और चन्द्रगुप्त के रथ पर सवार हो गई। वह यों रथ पर चढ़ रही थी कि पहिये के नौ टुकड़े हो गये। यह अपशकुन देखकर, चन्द्रगुप्त ने दुर्धरा को अस्वीकार कर दिया। तब चाणक्य ने उससे कहा—"नहीं, यह अच्छा शकुन है। इसका अर्थ है कि तुम्हारा वंश नौ पीढ़ियों तक राज्य करेगा।"

फिर चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने नन्द का राजमहल अपने आधीन कर लिया और वहाँ की सम्पत्ति को आपस में आधा आधा बाँट लिया। उस महल में एक दासी थी। इस दासी को विष की आदत थी। पर्वतक ने उस दासी को माँगा। चाणक्य मान गया। अग्नि के समक्ष पर्वतक ने उसका पाणिग्रहण किया। जब उसने उसका हाथ पकड़ा तो उस पर पसीना था और पसीने के द्वारा विष उसके शरीर में चला गया। उसने गिरते गिरते वैद्यों को बुलवाया, चन्द्रगुप्त ने जब वैद्यों को बुलाना चाहा तो चाणक्य ने उसको रोका। आधे राज्य का अधिकारी बिना चिकित्सा आदि के ही मर गया और तो और पर्वतक का राज्य भी चन्द्रगुप्त को मिला। [अगले मास समाप्त]

राम ने मूर्छित तारा को देखा। तारा ने राम को देखकर उनके पास आकर कहा—"राम, जिस बाण से आपने मेरे पति को मारा है, उसी बाण से मुझे भी मारकर, मुझे भी मेरे पति के पास भेज दीजिये। जिस तरह आप सीता के लिए तड़प रहे हैं, उसी तरह मेरे लिये वाली भी उस लोक में तड़पेगा। वाली की मृत्यु के बाद मैं जीवित शव ही हूँ, इसलिए आप पर स्त्री हत्या का दोष भी न लगेगा।" वह यों कहकर रोने लगी।

राम ने तार और सुग्रीव को यथोचित आश्वासन दिया। वाली के दहन क्रिया का उत्तरदायित्व, राम ने लक्ष्मण को सौंपा। तार किष्किन्धा जाकर वाली को ले जाने के लिए एक पालकी लाया। सुग्रीव और अंगद ने वाली को उठाकर पालकी में बिठाया। बलवान वानर पालकी उठाकर चले। पीछे किष्किन्धा नगर की स्त्रियाँ रोती चल रही थीं। एक नदी के किनारे रेत पर वाली की चिता की व्यवस्था की गई। अंगद ने विधि के अनुसार चिता को आग लगाई।

दहन क्रिया के बाद, सुग्रीव गीले कपड़े पहिने मन्त्रियों के साथ राम के पास आया। तब हनुमान ने राम से कहा—

"आपकी कृपा के कारण ही, सुग्रीव वानर राज्य प्राप्त कर सका। उसे राज्य का भार उठाना है। इसलिए आप आकर उसका विधि पूर्वक पट्टाभिषेक कीजिये।"

इस पर राम ने कहा—"हनुमान, पिता की आज्ञा के अनुसार मुझे चौदह वर्ष ग्रामों में व नगरों में पैर नहीं रखना चाहिए। अतः आप सब सुग्रीव को किष्किन्धा ले जाइये और उसका वहाँ विधि पूर्वक पट्टाभिषेक करवाइये।" राम ने सुग्रीव से अंगद को युवराज बनाने के लिए कहा। चूँकि वर्षा ऋतु शुरु होनेवाली है, इसलिए वर्षा के खतम होने तक ऋष्यमूक पर ही एक बड़ी गुफ़ा में रहूँगा। कार्तिक मास के प्रारम्भ होते ही, सुग्रीव को रावण पर आक्रमण के लिए सन्नद्ध रहने के लिए कहा।

सुग्रीव किष्किन्धा गया। विधि पूर्वक उसने वहाँ पट्टाभिषेक करवाया। किष्किन्धा के वानर बड़े सन्तुष्ट हुए। गज, गवाक्ष, गवय, शरभ, गन्धमादन, मैन्द, हनुमान, जाम्बुवान, नल ने सोने के कलशों में रखे पानी से सुग्रीव का अभिषेक किया। पट्टाभिषेक के बाद, सुग्रीव ने अंगद का युवराज के पद पर पट्टाभिषेक करवाया। अंगद ने किष्किन्धा के नागरिकों को, जो उसका आदर सम्मान करते थे सन्तुष्ट किया। फिर सुग्रीव राम लक्ष्मण के पास गया और जो कुछ हुआ था, उसने उसे सुनाया। किष्किन्धा वापिस आकर वह अपनी पत्नी रुमा के साथ आराम से समय बिताने लगा।

सुग्रीव के राजा बन जाने के बाद, राम लक्ष्मण ने अपना निवास प्रस्रवण पर्वत पर एक विशाल गुफ़ा में बदल लिया। इस गुफ़ा में सब तरह की सुविधायें थीं।

गुफा में बारिश की बौछार न आती थी, न तेज हवायें ही। समीप ही नदी थी। यही नहीं, यह गुफा किष्किन्धा के पास भी थी, किष्किन्धा के वानरों के गीत, वाद्य ध्वनि भी सुनी जा सकती थी। इस गुफा में राम दिन रात सीता के लिए तड़पते रहे। लक्ष्मण उन्हें आश्वासन देता जाता था। उन्हें कभी कभी यह भी आश्चर्य होता कि सुग्रीव मदद करेगा कि नहीं। वे इस प्रतीक्षा में थे कि कब ये चार मास बीतते हैं और कब शरत्काल आता है।

वर्षा ऋतु आयी और चली गई। सुग्रीव अपनी पत्नी रुमा और वाली की पत्नी तारा के साथ दिन रात इस तरह भोग विलास में मस्त रहा कि उसने मन्त्रियों पर राज्य भार छोड़ दिया और यह भी भूल गया कि राम की मदद करने का समय आ गया था।

तब हनुमान ने सुग्रीव के पास आकर कहा—"तुम्हें राज्य और कीर्ति मिल गई है। शत्रु भय भी नहीं है। परन्तु मित्रों की मदद की जिम्मेवारी, अभी वैसी की वैसी ही है। इस तरह की बातों में लापरवाही करना ठीक नहीं है। यद्यपि राम तुम्हारी मदद की प्रतीक्षा बड़ी आतुरता से कर रहे हैं और पत्नी के वियोग में दुःखी हैं, तो भी राम ने तुम्हारी जिम्मेवारी के बारे में याद नहीं दिलाया है। यदि उनके याद दिलाने से पहिले ही हमने अपना काम शुरु कर दिया तो हम लापरवाही के दोषी नहीं ठहराये जायेंगे। वे इस प्रतीक्षा में हैं कि तुम अपना वचन निभाओगे।"

यह सुन सुग्रीव चौंका। उसने नील को बुलाकर सेनाओं को एकत्र करने के लिए

कहा। वह घोषित करवा दिया कि जो वानर पन्द्रह दिनों में किष्किन्धा नहीं पहुँचेगा, उसको मरण दण्ड दिया जायेगा। जाम्बवान आदि मुखियाओं के पास अंगद को साथ लेकर नल को स्वयं जाने के लिए कहा।

एक दिन लक्ष्मण फलों की खोज में खूब घूम-घामकर गुफा में पहुँचा, तो राम अत्यन्त दुःखी बैठे थे। शरत्काल के साथ उनके वियोग का दुःख और भी बढ़ गया था। राम को उसने आश्वासन दिया। दुःख अनावश्यक था। कर्तव्य पूरा करने के लिए धैर्य और उपाय की आवश्यकता थी। राम ने कहा—"लक्ष्मण! वर्षा ऋतु चली गई है। शरत्काल आ गया है। ये चार महीने मैंने बड़े कष्ट से काटे हैं। राजाओं के युद्ध पर जाने का समय आ गया है। पर सुग्रीव का कहीं पता नहीं है। वह कुछ तैयारियाँ भी करता नहीं मालूम होता। राम का कोई नहीं है। राज्य भ्रष्ट है। जंगलों में फिर रहा है। पत्नी को रावण ले गया है। मारा मारा हमारी शरण में आया है—शायद वह यह सोच रहा है। चूँकि अब उसका काम हो गया है, इसलिए शायद अब अपना वचन भूल गया है। तुम किष्किन्धा जाकर कहो कि वह वचन न निभानेवाला पुरुषाधम है। प्रत्युपकार न करनेवाले के शव को कौव्वे और गिद्ध भी नहीं छूते। शायद वह फिर बाणों की ध्वनि सुनना चाहता है। क्या इसीलिए ही मैंने इस सुग्रीव से मैत्री करके बाली को मारा था। मैंने एक बाली को ही मारा था, पर इस सुग्रीव को परिवार के साथ मार सकता हूँ। इसलिए सुग्रीव से जो उचित समझो, वह कहो।"

लक्ष्मण को भी सुग्रीव पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। उसने राम से कहा—"उसे यह भी ख्याल नहीं रहा कि आपके कारण उसको राज्य प्राप्ति हुई। पत्नी प्राप्ति हुई। अब भी पाकर पत्नियों के संग मजा उड़ा रहा है। इस तरह के व्यक्ति को राजा नहीं रहने देना चाहिए। मुझे बड़ा गुस्सा आ रहा है। अभी जाकर मैं उसे बाली के पास भेज दूँगा। सीता को खोजने के लिए अंगद है ही और भी वानर वीर हैं।" बाणों को लेकर जाते हुए लक्ष्मण ने कहा।

राम ने लक्ष्मण को शान्त करते हुए कहा—"लक्ष्मण, जल्दबाजी न दिखाओ। मित्र बध करके निष्कारण पाप न करो। सुग्रीव ने समय पर न आने के सिवाय क्या अपराध किया है? तुम जाकर उससे मीठे ढँग से ही बात करो।"

लक्ष्मण किष्किन्धा पहुँचकर, सुग्रीव के घर गया। अति वेग से क्रुद्ध लक्ष्मण को जाते देखकर बड़े बड़े वानरों ने उसे शत्रु समझकर, उस पर फेंकने के लिए पेड़ उखाड़े। यह देख लक्ष्मण ने उनकी ओर घूरा। उसे घूरता देख वे दूर चले गये। कई ने सुग्रीव के घर जाकर बताया कि लक्ष्मण आ रहा था। पर सुग्रीव ने, जो तारा से बातें करता मस्त था, उनकी बातें न सुनीं।

इस बीच सुग्रीव के मन्त्रियों ने कुछ वानरों को यह मालूम करने के लिए भेजा कि लक्ष्मण आ रहा था कि नहीं। उनके साथ आये हुए अंगद को देखकर लक्ष्मण ने कहा—"भाई, सुग्रीव से जाकर कहो कि मैं आया हूँ। तुरत जाकर यह पता लगाओ कि वह मुझ से बात करता है कि नहीं।" अंगद डरता डरता सुग्रीव के पास

गया। उसने उसको और अपनी माँ को प्रणाम करके जो कुछ लक्ष्मण ने कहने के लिए कहा था, कहा। क्योंकि सुग्रीव नशे में था, इसलिए उसने उसकी एक न सुनी। परन्तु लक्ष्मण के रौद्र रुप को और वानरों के कोलाहल को देखकर सुग्रीव का नशा कुछ हटा।

जब अंगद प्लक्ष और प्रभाव नाम के मन्त्रियों को लेकर सुग्रीव के पास गया, तब वह कुछ होश में था। उन्होंने उससे कहा कि लक्ष्मण उससे मिलने आया था। सुग्रीव जान गया कि लक्ष्मण खाली हाथ नहीं आया था, बल्कि हथियारों को लेकर आया था और गुस्से में था।

सुग्रीव ने मन्त्रियों से कहा—"मैंने कोई गल्ती नहीं की है। लक्ष्मण मुझ पर क्यों क्रुद्ध है? कहीं मेरे शत्रुओं ने उससे मेरी चुगली तो नहीं खायी है? तुम जैसे तैसे उसके क्रोध का कारण पूछो। ऐसी बात नहीं कि मुझे राम लक्ष्मण से भय है। पर मित्र के क्रुद्ध होने पर चिन्तित होना स्वाभाविक ही है। राम के उपकार का प्रत्युपकार करना मेरे लिए सम्भव नहीं है।"

तब हनुमान ने सुग्रीव से कहा—"राजा, राम शायद तुम पर कुछ ही बिगड़े है। सचमुच क्रुद्ध नहीं हुए हैं। तुमने शरत् काल के आने की परवाह न की। इसलिए ही लक्ष्मण आये हैं। अगर वह कुछ कह भी बैठे तो तुम सब सहलेना। क्योंकि गल्ती तुम्हारी ही है। राम को गुस्सा दिलाना किसी के लिए अच्छा नहीं है, और तुम्हारे लिए, जिसका उन्होंने भला किया, सर्वथा अनुचित है।"

इस बीच लक्ष्मण, सुग्रीव के अन्तःपुर तक आया। अन्दर स्त्रियों की आवाज
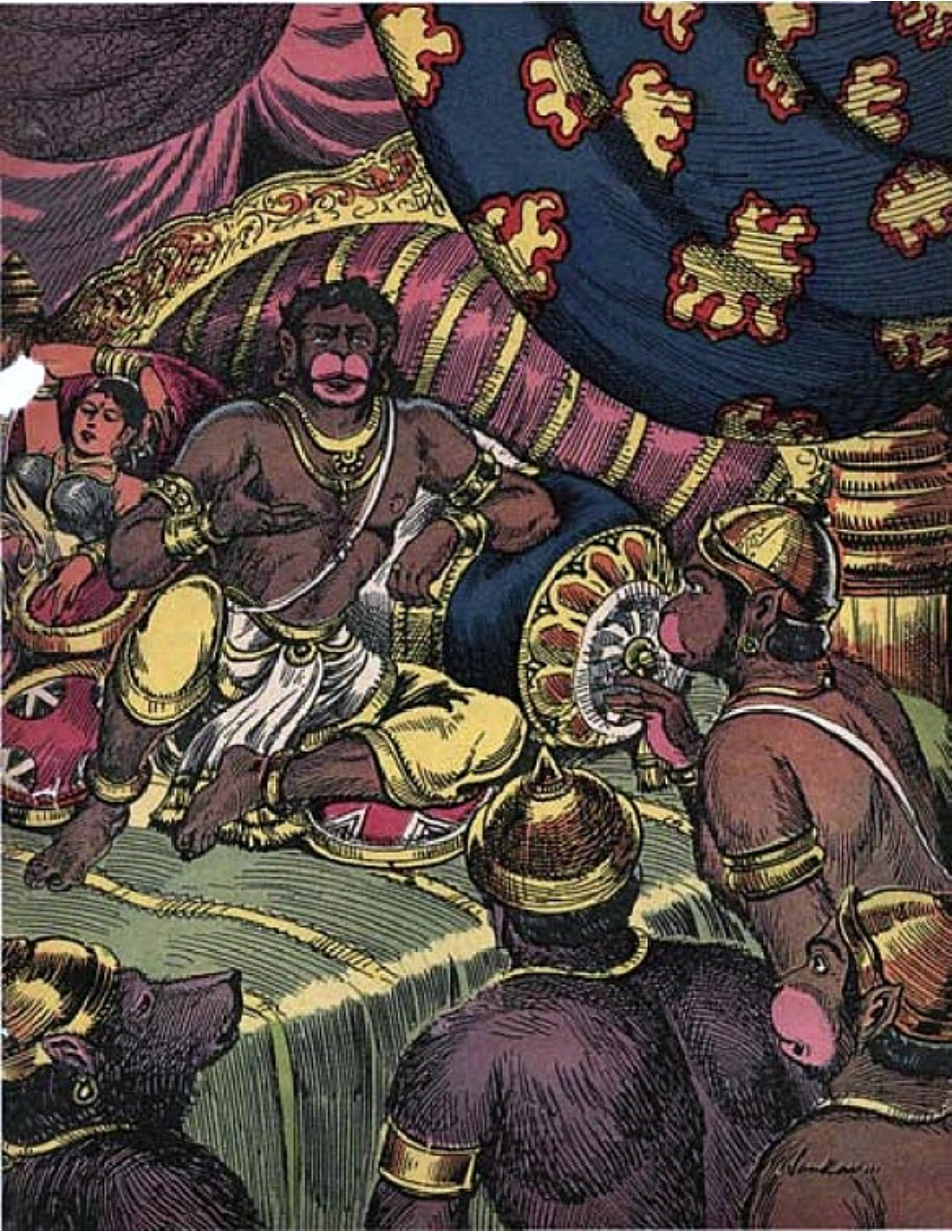
सुनकर, वहीं रुक गया। लक्ष्मण के धनुष की आवाज सुनकर सुग्रीव उसके सामने जाते हुए डरा और उसने तारा को लक्ष्मण से बातें करने के लिए भेजा।

तारा लक्ष्मण के पास आयी। "आप, लगता है, क्रुद्ध हैं! क्यों! क्या आपकी बात किसी ने नहीं मानी है!" तारा ने पूछा।

"सुग्रीव हमेशा नशे में रहता है और वह राज्य कार्य नहीं देखता। हमारी परवाह भी नहीं करता, क्या तुम यह नहीं जानती! युद्ध की तैय्यारी के लिए चार महीने का समय लिया। समय समाप्त हो गया और हमारा कार्य अभी शुरू नहीं हुआ। हमें क्या करना है तुम ही बताओ।" लक्ष्मण ने तारा से कहा।

तारा ने उससे कहा—"सुग्रीव भोग विलास में मस्त है, यह देख क्रुद्ध न होओ। वह आपका काम नहीं भूला है। आपके काम पर उसने वानरों को लगाया हुआ है। दूर दूर पर्वतों से वानर लाखों और करोड़ों की संख्या में आ रहे हैं।" कहकर वह उसको अपने साथ अन्तःपुर में ले गई।

जब लक्ष्मण अन्दर गया तो सुग्रीव पीकर कई स्त्रियों के बीच में बैठा था। लक्ष्मण यह देख बिगड़ा। उसने सुग्रीव को देखकर कहा—"तुमने उपकारी मित्र से झूठी प्रतिज्ञा की। परम पापी, तुम कृतघ्न हो। तुम्हें कोई भी मार सकता है। राम से तुमने काम करवा लिया। पर उसका काम तुमने शुरु नहीं किया। याद रखो बाली किस रास्ते गया था और सीता को खोजो।" लक्ष्मण ने कहा।

२०. इग्वाज जलपात

इग्वाज नदी ब्राजील के दक्षिण प्रान्त के पठार में निकलती है। पश्चिम में आठ सौ मील बहने के बाद वह परना नामक नदी में मिलती है। यह नदी जल प्रपातों के लिए प्रसिद्ध है। इसके जलपातों में इग्वाज सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह अर्जेन्टाइन ब्राजील, पराग्वे के सीमा सन्धि से १२ मील दूर है।

जलपात के ऊपरले भाग में तीन चार जलपात हैं। उनके कारण नदी की एक धारा फिर गिरती है और मुख्य नदी से जा मिलती है। यहाँ के प्रपात की ऊँचाई १८० फीट है, पर इस नदी की एक धारा ७६० फीट ऊँचाई से भी गिरती है।

वर्षा ऋतु में इसकी चौड़ाई १३,००० फीट से भी अधिक होती है। प्रसिद्ध नियागरा और विक्टोरिया जलप्रपात भी इसके सामने कुछ नहीं हैं।

१. **दिलीपकुमार मलाकार, इलहाबाद**

क्या आप रामायण और महाभारत पहिली बार "चन्दामामा" में छाप रहे हैं ?

हाँ, इस रूप में पहिली बार।

२. **यतीन्द्रसिंह, स्वतन्त्र भारत मिल्स,**

क्या आप चटपटे प्रश्नों के लिए ईनाम भी देते हैं।

जी, नहीं।

३. **अशोककुमार गुप्त, सहारनपुर**

क्या कारण है कि चन्दामामा के मूल्य बढ़ने पर भी कोई पृष्ठ नहीं बढ़े हैं ?

मूल्य इसलिए प्रधानतः बढ़ाया गया है, क्योंकि मुद्रण सामग्री के दाम बहुत बढ़ गये हैं।

४. **प्रेमपाल शर्मा,**

आप कभी राजे-महाराजाओं की पुरानी कहानियों को छोड़कर, आधुनिक कहानियाँ छापेंगे, जैसी कि दूसरी पत्रिकाओं में छपती हैं ?

हाँ, यदि वे चन्दामामा के ढाँचे में खप सकीं।

५. **सुरजीतसिंह, चित्तौड़**

क्या "तीन मान्त्रिक" पुस्तकाकार में उपलब्ध है ?

जी नहीं।

६. रमेशकुमार सोजी, पेन्ड्रा रोड

"चन्दामामा" बाहर किन-किन देशों में बिकने जाता है ?

उन सब देशों में, जहाँ-जहाँ भारतीय हैं।

चन्दामामा में इतनी बड़ी धारावाहिक कहानियाँ क्यों देते हैं ? क्या आप नहीं जानते कि हम पिछली कहानी भूल जाते हैं ?

अगर कहानी छोटी होगी, तो वह धारावाहिक कैसे बन सकेगी ? भूलने की आशंका है, इसलिए ही हम भूमिका के तौर पर पिछली कहानी का सारांश देते हैं !

क्या अग्नि द्वीप, कुमार सम्भव, गुलाम लड़की पुस्तक के रूप में मिल सकेंगी ?

अभी प्रकाशित ही नहीं हुई हैं।

७. अशोककुमार पाणिक्यर, रतलाम

क्या आप "संसार के आश्चर्य" पिछले अठारह वर्षों से ही देते आ रहे हैं ?

जी नहीं, कब से दे रहे हैं, इसका क्रम, शीर्षक के ऊपर दिया जाता है।

८. आर. हरिकृष्ण, मोसाबोनि माइन्स

आप क्यों "चन्दामामा" के पन्नों को बढ़ाकर, कहानी नहीं छापते हैं ?

कहानियाँ तो छापेंगे, परन्तु फिलहाल पृष्ठ संख्या तो बढ़ाने का विचार नहीं है।

९. नाराचन्द त्रिपाठी, अल्मोड़ा

"विचित्र जुड़वा" का मूल्य क्या है ?

"विचित्र जुड़वा" का मूल्य १ रुपया है, तथा डाक खर्च आठ आना अलग।

१०. मुकेशचन्द्र मिश्र, कानपूर

"चन्दामामा" मँगाने के लिए कितने रुपये भेजने पड़ते हैं।

"चन्दामामा" वार्षिक चन्दा ७ रु. २० न. पै. है, पैसा मनिऑर्डर द्वारा, मैनेजर चन्दामामा पब्लिकेशन्स के नाम भेजना चाहिए।

Photo by Ananth Desai
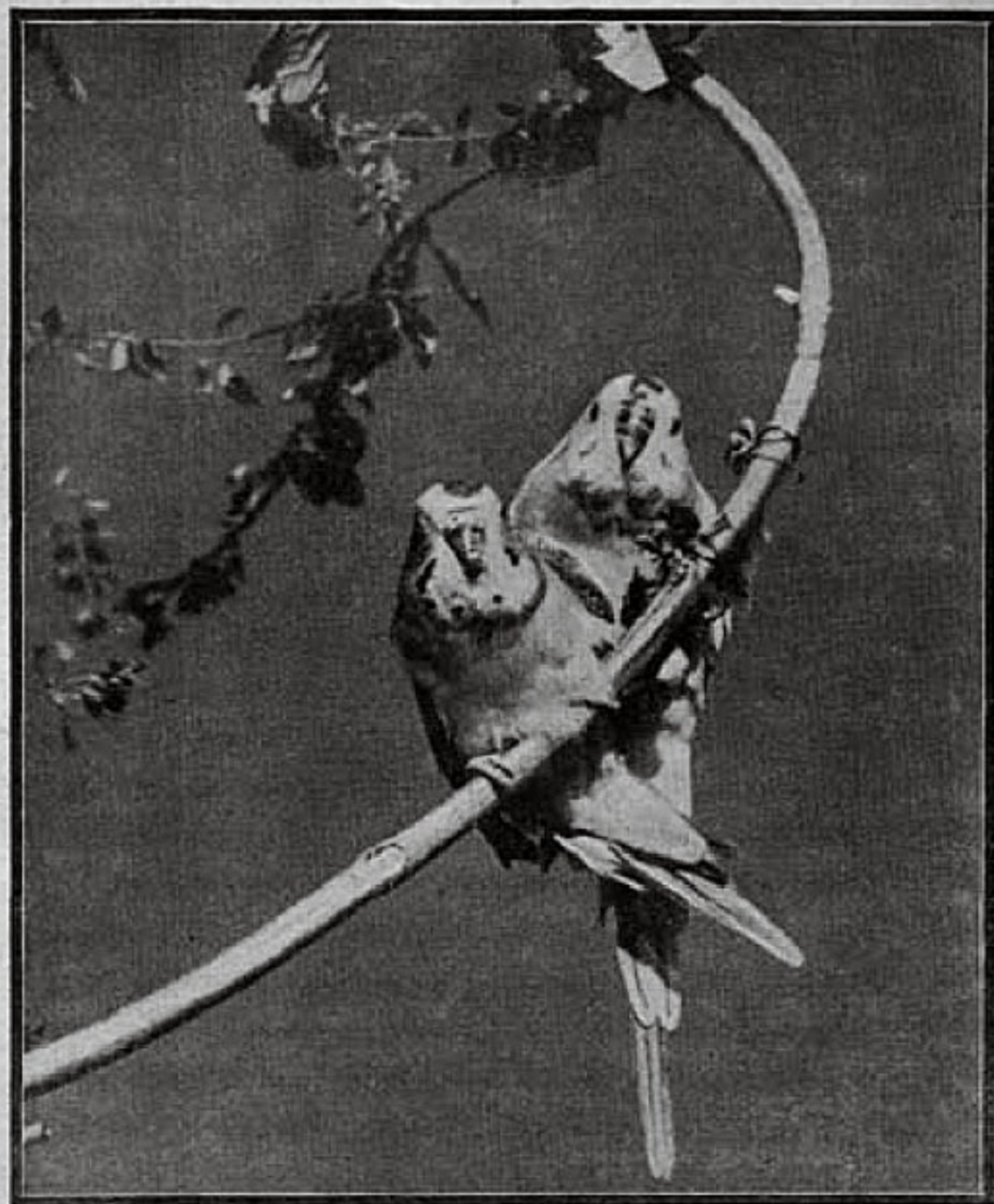
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

हम हैं दोनों जीवनसाथी !

प्रेषिका :
कु. सुकांति मांचलीकर - गाडे

Photo by Prabhakar Mahadik

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

है अनोखी हमारी प्रीति !!

प्रेषिका :
कु. सुकांति जांबावलीकर - आर्के

P. G. REDDY.
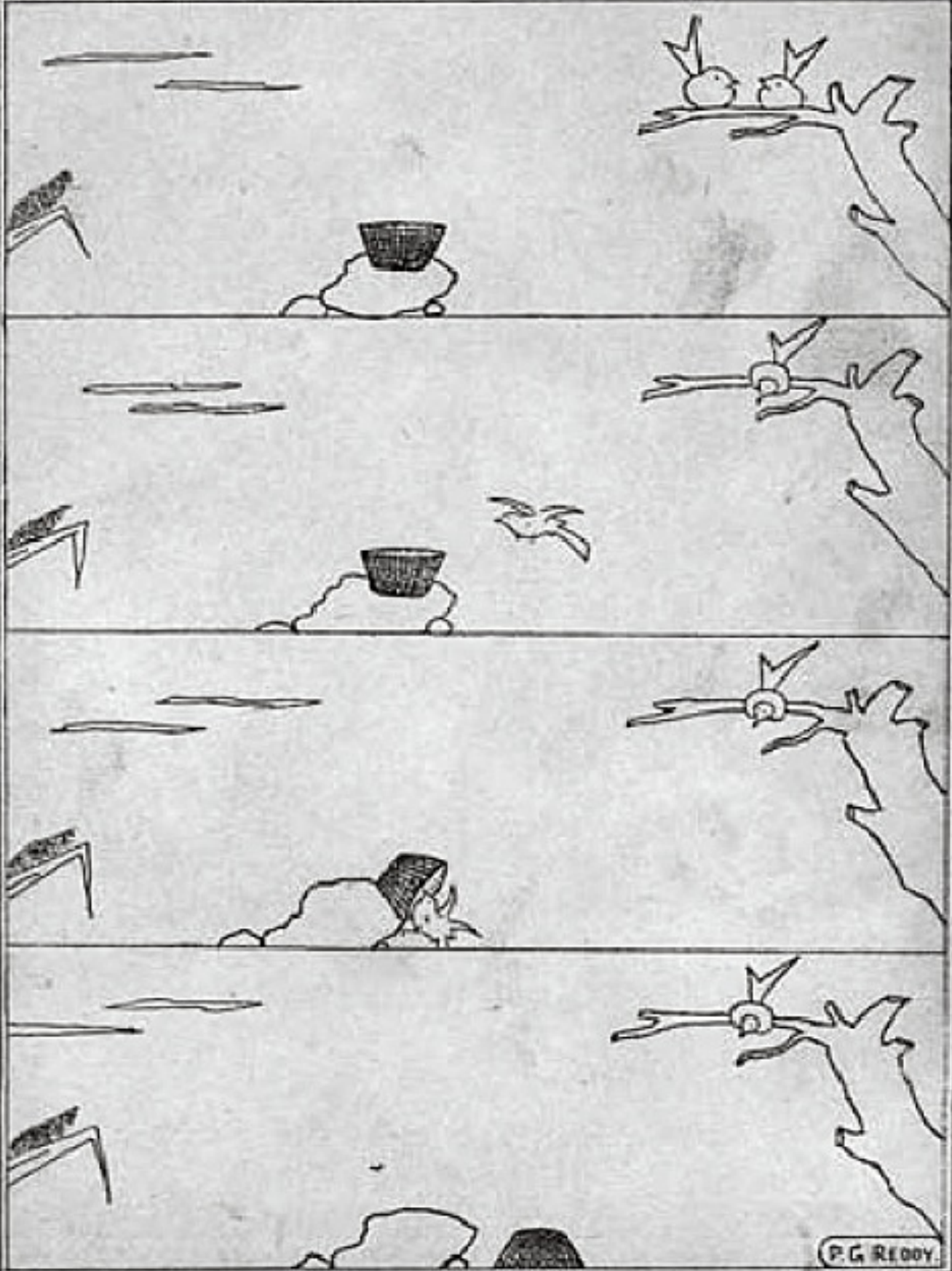
फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अक्तूबर १९६२ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ अगस्त १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

अगस्त – प्रतियोगिता – फल

अगस्त के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषिका को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **हम हैं दोनों जीवनसाथी !**
दूसरा फ़ोटो : **है अनोखी हमारी प्रीति !!**

प्रेषिका : **कु॰ सुकांति स॰ जांबावलीकर,**
आर्के - मडगांव (गोवा)

महाभारत

युधिष्ठिर ने यज्ञ करने का निश्चय किया। व्यास ने कहा कि इस यज्ञ में ब्राह्मणों को तिगुना दान दिया जाय। इस तरह करने से तीन अश्वमेध यज्ञों का फल मिलेगा।

यज्ञ के बाद युधिष्ठिर ने अपना सारा राज्य व्यास को देकर कहा—"महात्मा, आप इस भूमि को लेकर ब्राह्मणों में बाँट दीजिये। मैं, मेरे भाई और पत्नी वनों में चले जायेंगे।" व्यास ने कहा—"ब्राह्मणों को भूमि से क्या फायदा? उसके बराबर सोना दान करो। भूमि तुम अपने पास ही रखो।"

सब खुशियाँ मना रहे थे कि कहीं से कोई नेवला आया। उसके शरीर का एक भाग सोने का सा था। उसने कहा—"यह भी कोई बड़ा यज्ञ है! एक मुनि के जौ के आटे के दान से, जितना लाभ हुआ था, उतना भी इससे न होगा। क्योंकि वह दान मैंने स्वयं देखा था, इसलिए मैं जानता हूँ।"

ब्राह्मण को आश्चर्य हुआ। नेवले से उन्होंने जौ के आटे के दान के बारे में पूछा। नेवले ने यों कहा—

"कुरुक्षेत्र में एक ब्राह्मण भिक्षा माँग कर, जीवन निर्वाह किया करता था। ब्राह्मण, उसकी पत्नी, लड़का, बहू, जो कुछ भोजन मिलता उसे बटोर कर खा पी लेते। पर इतने में अकाल पड़ा। पेड़ सूख गये। जब धान न मिला, तो ब्राह्मण भूखे तड़पने लगे। उस हालत में उनको एक दिन कुछ जौ मिला। उसको पीसकर, चारों बाँटकर खाने को बैठे थे, कि उनके पास एक अतिथि आया। अतिथि का सत्कार करके वे उसे अन्दर ले गये। अतिथि को भूखा देखकर, ब्राह्मण ने अपना हिस्सा उसको दे दिया। अतिथि ने वह खाया और यह दिखाया जैसे उसकी भूख न मिटी हो। यह देख ब्राह्मण की पत्नी ने भी अतिथि को अपना हिस्सा दे दिया। वह खाकर भी अतिथि का पेट न भरा। इसलिए ब्राह्मण के लड़के और बहू ने भी अपना हिस्सा दे दिया। सब का हिस्सा खाकर, सन्तुष्ट होकर अतिथि ने कहा—"मैं यम हूँ। मैं तुम्हारी दानशीलता की परीक्षा लेने आया था। तुम्हारे दान के फल स्वरूप स्वर्ग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। तुरत वहाँ चले जाओ।"

नेवले ने कहा—"यह सब मैंने स्वयं अपनी आँखों देखा है। मैं घूमता घूमता उस जगह पहुँचा। वहाँ बचा खुचा, जौ का आटा मेरे शरीर पर लगा। और जहाँ जहाँ वह लगा, वह भाग सोने का हो गया। बाकी भाग भी सोने का करने के लिए मैं जगह जगह यज्ञों में गया। ढेर सी आशा ले कर यहाँ भी आया। युधिष्ठिर के किये हुए इस अश्वमेध यज्ञ के कारण भी मेरा सारा शरीर सोने का नहीं हुआ।

Printed by B. NAGI REDDI for the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

वॉटरबरीज़ विटामिन कम्पाउन्ड का सेवन कब करना चाहिए?
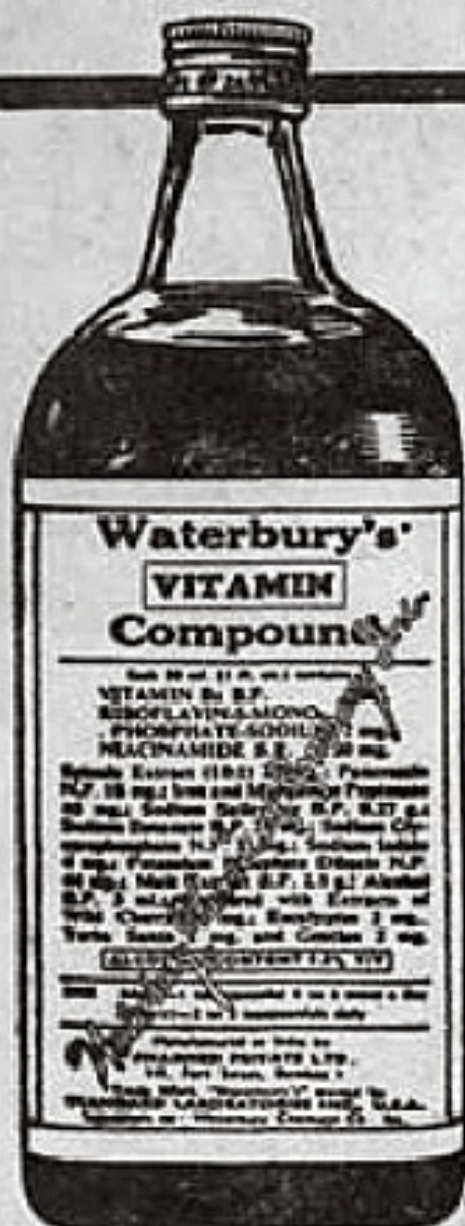
- हर प्रकार की जलवायु और मौसम में, बच्चों से बूढ़ों तक के लिये वॉटरबरीज़ विटामिन कम्पाउन्ड एक बढ़िया टॉनिक है।
- इसमें विटामिन बी, माल्ट एक्स्ट्रैक्ट और कई स्वास्थ्य और शक्ति वर्धक तत्व सम्मिलित हैं। वॉटरबरीज़ विटामिन कम्पाउन्ड भूख बढ़ाता है और आप स्वस्थ रहते हैं।

वॉटरबरीज़ विटामिन कम्पाउन्ड

वॉर्नर-लैम्बर्ट फार्मास्युटिकल कम्पनी (सीमित दायित्व सहित यू.एस.ए. में संस्थापित)